प्रकाशितवाक्य

मसीही विश्वासियों के लिए "प्रकाशितवाक्य" नामक बाइबॅल-पुस्तक का एक अध्ययन

PRAKASHITVAAKYA

First Hindi Edition : July-2008

Adapted into Hindi by	:	**J.P. Pandey**
Assisted by	:	**R.K. Khullar**

This book is based on the English title "Lessons in Revelation for Growing Believers" (Tim Mcmanigle) published by the Fellowship Bible Church, 3217, Middle Road, Winchester, VA. 22602 (U.S.A.).

Copyright © The Fellowship Bible Church,
Winchester, VA. (U.S.A.).

All rights reserved

Printed at Hi-Prints, Gorakhpur for Brother Timothy

विषय सूची

अध्याय	पृष्ठ संख्या
एक	5—13
दो	14—19
तीन	20—24
चार	25—29
पांच	30—34
छः	35—39
सात	40—45
आठ	46—50
नौ	51—55
दस	56—62

प्रकाशितवाक्य

नामक

बाइबॅल-पुस्तक का एक संक्षिप्त अध्ययन

प्रभु का दर्शन

1

"यीशु मसीह का प्रकाशन, जिसे परमेश्वर ने उसे इसलिए दिया कि अपने दासों को वे बातें दिखाए जो शीघ्र होनेवाली हैं। उसने अपना स्वर्गदूत भेजकर इन्हें अपने दास यूहन्ना को बताया" (प्रका0 1:1)। पवित्र बाइबॅल की इस पुस्तक में भावी घटनाओं के बारे में ईश्वरीय प्रकाशना पायी जाती है। इसीलिए इसका नाम **प्रकाशितवाक्य** रखा गया है। **प्रकाशितवाक्य** में यूहन्ना ने जो कुछ लिखा वह (सब) परमेश्वर ने अन्य किसी पर प्रकट नहीं किया था। यदि यूहन्ना के द्वारा प्रभु परमेश्वर ने यह सब प्रकट नहीं किया होता तो लोगों को यह ज्ञान प्राप्त नहीं होता। प्रभु परमेश्वर यह चाहता है कि उसकी संतानों को अनन्तकाल सम्बन्धी भावी घटनाओं का ज्ञान हो (इफि0 1:9)। प्रकाशितवाक्य के पहले अध्याय के पहले पद में यह लिखा है कि अपने लोगों को "प्रकाशितवाक्य... परमेश्वर ने इसलिए दिया कि... वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए"। यूहन्ना को यह प्रकाशना प्राप्त होने से अब तक लगभग दो हजार साल हो चुके हैं। मनुष्य की दृष्टि में यह कम समय नहीं है। इसके विपरीत, पवित्र बाइबॅल के अनुसार, परमेश्वर की दृष्टि में एक दिन एक हजार साल जैसा है अर्थात् एक हजार वर्ष एक दिन के बराबर (दू0 पत0 3:8)।

प्रभु परमेश्वर सम्पूर्ण इतिहास को देखने में समर्थ है, अर्थात् अतीत (भूत), वर्तमान और भविष्य। वह समस्त इतिहास को एक ही नजर में, तत्काल देख–समझ सकता है। इसके विपरीत, हम केवल वर्तमान में हो रही घटनाओं को जानते हैं और अतीत की कुछ घटनाओं के बारे में। जिस तरह परमेश्वर सब कुछ देखता–समझता है, उस प्रकार हम सारी तस्वीर देखने में समर्थ नहीं हैं। इस प्रकार समय–सीमा के कारण हमारा ज्ञान बहुत सीमित है। प्रभु यीशु के

देहधारण, बलिदान एवं स्वर्गारोहण के समय से हम उन अनन्त दिनों में हैं जो उसकी कलीसिया के लिए उसके पुनरागमन की ओर बढ़ रहे हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमें सदा–सर्वदा अपने साथ रखने के लिए वह किसी भी क्षण पुनः वापिस आ सकता है। उसके वापिस आने पर प्रकाशितवाक्य में लिखी अधिकतर घटनाओं का पूरा होना प्रारम्भ हो जायेगा।

"मैं यूहन्ना, जो तुम्हारा भाई और यीशु के कारण क्लेश, राज्य और धीरज में तुम्हारा सहभागी हूं, परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक द्वीप में था" (प्रका0 1:9)। यहां यूहन्ना ने स्वयं को उन लोगों (विश्वासियों) का "भाई" और "क्लेश" में उनका "सहभागी" बताया है जो बहुत सतावट सह रहे थे। उन दिनों मसीही (विश्वासी) होने का मतलब अत्यधिक नफरत व सतावट का शिकार होना था। स्वयं यूहन्ना भी सतावट का शिकार था। वह अपने विश्वास एवं सुसमाचार–प्रचार के कारण **पतमुस** नामक एक छोटे से द्वीप में सजा सह रहा था। **प्रेरितों के काम** के चौथे अध्याय में पतरस और यूहन्ना को सुसमाचार प्रचार बन्द करने की चेतावनी दिए जाने का उल्लेख है। परन्तु उनका उत्तर यह था कि वे उन ईश्वरीय बातों के बारे में साक्षी देना बन्द नहीं कर सकते जिन्हें उन्होंने स्वयं देखा व सुना है (प्रेरित0 4: 18–20)। शायद उन अधिकारियों ने यह सोचा कि यूहन्ना को इस छोटे से द्वीप में दंड सहने भेजकर उसके द्वारा सुसमाचार प्रचार पर रोक लगा देंगे। वे परमेश्वर की सर्वसत्ताधारी सामर्थ्य से अपरिचित थे। प्रभु परमेश्वर जब किसी व्यक्ति को अपने उद्देश्य के अनुसार इस्तेमाल करना चाहता है तो संसार की कोई भी ताकत उसे ऐसा करने से नहीं रोक सकती। इसीलिए यूहन्ना को एक सुनसान द्वीप में कैदी बनाने के बावजूद प्रभु परमेश्वर अपनी योजनानुसार उसे इस्तेमाल करता रहा, क्योंकि वह सर्वसत्ताधारी परमेश्वर है और किसी को कहीं भी अपनी इच्छा–योजना के अनुसार इस्तेमाल कर सकता है।

"मै प्रभु के दिन आत्मा में आ गया और मैंने अपने पीछे तुरही की ध्वनि–सा एक बड़ा शब्द... सुना" (प्रका0 1:10)। यूहन्ना लिखता है कि *"मैं आत्मा में आ गया";* या यूं कहें कि उसका प्राण (मन, इच्छा, संवेग) पवित्र आत्मा की अधीनता में था। उसके पाठकों के लिए यह जानना बहुत जरूरी था कि यूहन्ना (परमेश्वर की) **आत्मा** के नियंत्रण व अधीनता में था, क्योंकि तभी वे जान सकते थे कि उसके द्वारा लिखी गई बातें पवित्र आत्मा द्वारा प्रकट की गई हैं, अतएव सत्य हैं। यूहन्ना अपनी बात को सुस्पष्ट करते हुए कहता है कि जब वह पवित्र आत्मा की अधीनता व नियंत्रण में था, तब पवित्र आत्मा द्वारा उसे भावी बातों का एक दर्शन दिया गया। यद्यपि कुछ लोग यहां प्रयुक्त "प्रभु के दिन" को सप्ताह का पहला दिन समझने लगते हैं, लेकिन यूहन्ना को उस भावी घटना का दर्शन दिया गया जबकि प्रभु अपनी कलीसिया को लेने वापस आएगा– "प्रभु के दिन" का दर्शन [बाइबॅल में "प्रभु के दिन" (शब्दों) का सप्ताह के पहले दिन के मायने में प्रयोग नहीं हुआ है। संभवतः उसे भावी "प्रभु के दिन" का पहले आत्मिक दर्शन प्रदान किया गया, तत्पश्चात उस दर्शन की बातों को लिपिबद्ध कराया गया]। इसके बाद इस दसवें पद में यूहन्ना यह कहता है कि उसने "अपने पीछे तुरही की ध्वनि–सा एक बड़ा शब्द यह कहते सुना..."।

"मैं अल्फा और ओमेगा, प्रथम और अंतिम हूं। जो कुछ तू देखता है उसे पुस्तक में लिख और सातों कलीसियाओं अर्थात् इफिसुस, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलादेलफिया और लौदीकिया को भेज दे" (प्रका0 1:11)। तुरही की ध्वनि जैसी जो वाणी उसे सुनायी दी वह प्रभु यीशु की वाणी थी, क्योंकि अन्य कोई व्यक्ति "अल्फा और ओमेगा, प्रथम और अंतिम" होने का दावा नहीं कर सकता था। इन शब्दों के द्वारा प्रभु यीशु यह कह रहा था कि सब कुछ **उसी** से प्रारम्भ हुआ है और उसी के द्वारा ही सब कुछ अंतिम रूप में समाप्त (पूर्ण या सम्पन्न) किया जाएगा। तात्पर्य यह है कि सब

कुछ उसी के नियंत्रण में रहा है और सदैव उसी के नियंत्रण में रहेगा। प्रभु परमेश्वर होने के कारण स्वयं उसका कोई प्रारम्भ नहीं और उसका कभी अन्त भी नहीं। वह कभी बदलता भी नहीं। वह सब कुछ जानता (सर्वज्ञानी) है, वह सब जगह उपस्थित (सर्वत्र उपस्थित या सर्वदर्शी) है, और सर्वशक्तिमान (सर्वसामर्थी) है। उससे अधिक महान अन्य कोई नहीं है (कुलु0 1:16–17)। सर्वस्व के "आदि और अन्त" अर्थात् प्रभु यीशु ने यूहन्ना को यह निर्देश दिया कि उसने जो कुछ देखा, वह सब लिख कर तत्कालीन एशिया की सातों कलीसियाओं के पास भेज दे।

"तब मैं उसे, जो मुझ से बोल रहा था, देखने को मुड़ा और फिरकर मैंने सोने के सात दीपदान देखे, और उन दीपदानों के मध्य मनुष्य के पुत्र सदृश्य एक पुरुष को देखा जो पैरों तक चोंगा पहिने और छाती पर एक सुनहरा पट्टा बांधे हुए था। उसका सिर तथा उसके बाल ऊन सदृश श्वेत और हिम के समान उज्जवल थे, और उसकी आंखें आग की ज्वाला के सदृश थीं। उसके पैर ऐसे चमकदार पीतल के समान थे जो भट्ठी में तपाकर चमकाया गया हो। उसकी वाणी महाजलनाद जैसी थी। वह दाहिने हाथ में सात तारे लिए था, और उसके मुख से दोधारी तेज तलवार निकलती थी। उसका मुख–मण्डल मध्याह्न के सूर्य के सदृश चमक रहा था" (प्रका0 1:12–16)। जब यूहन्ना ने उससे बात करने वाले की ओर देखा तो उसे सात दीपदानों के मध्य प्रभु यीशु दिखाई दिया। यह दर्शन इतना महान, तेजस्वी एवं महिमावान था कि संभवतः यूहन्ना के लिए देखी हुई बातों का वर्णन करना आसान नहीं था। इसलिए प्रभु यीशु के प्रकटीकरण (रूप) को उसने उन चीजों के समान (उन मानवीय शब्दों में) बताया जिसे लोग समझ सकते हैं। हो सकता है कि प्रभु यीशु का यह स्वरूप कुछ लोगों को बड़ा भयावह लगे। परन्तु स्मरण रहे कि यह दर्शन प्रभु यीशु को सर्वसामर्थी न्यायकर्ता के रूप में दर्शाता है, अर्थात् सुसमाचार पर विश्वास करने से इनकार करने वालों

का न्याय करने के लिए पुनः वापिस आने वाला सर्वशक्तिमान ज़ज़। अपने विश्वासियों के लिए मसीह यीशु ज़ज़ नहीं बल्कि उनका उद्धारकर्ता, भाई व मित्र है। मसीह का पुनः आगमन उसके विश्वासियों में भयाकुलता के बजाय उसके प्रति प्रेमपूर्ण एवं प्रशंसापूर्ण भाव–विचार पैदा करता है।

अविश्वासियों के न्यायकर्ता के रूप में प्रकट होने वाले प्रभु यीशु के इस चित्रण पर एक बार फिर ध्यान दीजिए। यहां पवित्र वचन कहता है कि "उसका सिर तथा उसके बाल ऊन सदृश श्वेत और हिम के समान उज्ज्वल" थे। बाइबॅल में प्रायः श्वेत रंग पवित्रता की ओर इंगित करता है। चूंकि प्रभु यीशु पूर्णरूपेण पवित्र है, इसलिए संसार का न्याय करने का पूर्ण अधिकार रखता है। यूहन्ना आगे लिखता है कि "उसकी आंखें आग की ज्वाला के सदृश थीं"। जब अविश्वासियों का न्याय करने के लिए यह सर्वशक्तिमान ज़ज़ अर्थात् प्रभु यीशु वापस आएगा, तब जैसे अग्नि–ज्वाला अपने मार्ग में सब कुछ जलाती जाती है, उसी प्रकार किसी के जीवन की कोई बात ईश्वरीय न्याय दण्ड से बच नहीं पाएगी। वह हर समय सब कुछ देखता है अर्थात् उसके समक्ष सब कुछ बेपर्द है (प0 कुरि0 3:13–16)। इसके अतिरिक्त "उसके पैर ऐसे चमकदार पीतल के समान थे जो भट्ठी में तपाकर चमकाया गया हो"। मिलाप–तम्बू के प्रवेश–द्वार के भीतरी ओर रखी होमबलि की **वेदी** भी पीतल से मढ़ी होती थी जहां इस्राएली लोग पाप–बलि अर्पित करते थे। यह इस्राएलियों को निरन्तर इस सच्चाई की याद दिलाता था कि परमेश्वर न्यायी है, और पाप को मृत्यु–दण्ड द्वारा दंडित करता है। प्रभु यीशु के पैरों का भट्ठी में तपाए गए पीतल जैसे दिखना इस आध्यात्मिक सच्चाई की एक भौतिक तस्वीर है कि मानव जाति के पापों का दण्ड–मूल्य वही है – दोषी मानव जाति के पाप के दंड–मूल्य को (अपनी मृत्यु द्वारा) स्वयं चुकता करने वाला। उद्धारकर्ता ही न्यायकर्ता है। यूहन्ना आगे लिखता है कि उसकी (अर्थात दर्शन में प्रकट प्रभु

यीशु की) वाणी "महाजलनाद जैसी" थी। तेजी से बहती हुयी विशाल जलधारा बहुत ताकतवर होती है और उसकी आवाज बहुत तेज होती है। ऐसी जलधारा के मार्ग की हरेक चीज उसके जोरदार बहाव में नष्ट हो जाती है। सच्चे न्यायकर्ता प्रभु यीशु के सामर्थी न्याय–शब्दों को सुनते ही अविश्वासी लोग अनन्त दंड में बह जाएंगे।

इसके पश्चात् यूहन्ना यह कहता है कि दर्शन में दिखाई दिये प्रभु यीशु के "मुख से दोधारी तलवार निकल" रही थी। उत्तम अभिव्यक्तिशीलता से सम्पन्न व्यक्ति सोचने–विचारने में भी तेज होते हैं। प्रायः उनके शब्दों में भी बुद्धिमत्ता भरी होती है, जिसका झटपट जवाब देना कठिन होता है। सुसमाचारों में इसके कई उदाहरण पाए जाते हैं – जबकि फरीसियों ने प्रभु यीशु को अपनी बातों में फंसाने का निष्फल प्रयास किया। फरीसी उसके प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ रहे। कुछ इसी प्रकार, जब अविश्वासी लोगों पर वह अपना न्याय–दंड सुनाएगा तब उसकी वाणी "दोधारी तेज तलवार" समान होगी। उसके समक्ष स्वयं को कोई भी निर्दोष साबित नहीं कर पाएगा – सभी अविश्वासी निरुत्तर होंगे।

इसके बाद यह लिखा है कि "उसका मुखमंडल मध्याह्न के सूर्य के सदृश दमक रहा" था। क्या आपने कभी सूर्य की ओर देखते रहने की कोशिश की है? ऐसा करना सम्भव नहीं है, क्योंकि सूर्य की चमक–दमक अत्यधिक तेज होती है। जबरन ऐसा करने से हमारी आंखें अंधी हो सकती हैं। दूसरा थिस्सलुनीकियों की पुस्तक के दूसरे अध्याय के आठवें पद में पौलुस भी यही कहता है कि मसीह के "आगमन के तेज' में इतनी अधिक ज्योति व तीक्ष्णता होगी कि ख्रीष्ट–विरोधी को भस्म कर देगी जैसे कि दमिश्क के मार्ग पर "मसीह की महिमा' की ज्योति व चमक के समक्ष शाऊल अचेत व पराजित हो गया था (प्रेरि0 9:3–4)। सर्वशक्तिमान ज़ज़ के रूप में प्रभु यीशु के आगमन के समय उसके समक्ष कोई भी ठहर नहीं सकेगा।

"जब मैंने उसे देखा तो मृतक के समान उसके पैरों पर गिर पड़ा। तब उसने अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखा और कहा "भयभीत न हो; मैं ही प्रथम, अंतिम और जीवित हूं" (प्रका0 1:17)। न्यायकर्ता के रूप में प्रभु यीशु के दर्शन से अत्यधिक विस्मित व व्याकुल होकर यूहन्ना उसके चरणों पर गिर पड़ा। सर्वशक्तिमान न्यायी के रूप में प्रभु यीशु की वापसी के समय अविश्वासी जगत भी ऐसा ही करेगा। बहरहाल, यूहन्ना के प्रति प्रभु की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें! प्रेम व कोमलता के साथ यूहन्ना पर अपना हाथ रखते हुए प्रभु यीशु ने उससे कहा कि वह भयभीत न हो। परमेश्वर की संतान होने के कारण मसीह के विश्वासी उसके भाई, बहिन और मित्र हैं। विश्वासियों के प्रति प्रभु यीशु की प्रतिक्रिया स्वीकार्यतापूर्ण, प्रेमपूर्ण व दयापूर्ण होगी, न कि न्याय व दंड की।

"मैं मर गया था और देख, मैं युगानुयुग जीवित हूं। मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे पास हैं" (प्रका0 1:18)। चूंकि मसीह हमारे पापों के बदले मरा एवं पुनः जीवित हो उठा, इसलिए स्वर्ग, पृथ्वी तथा पृथ्वी के नीचे का समस्त अधिकार उसे प्रदान किया गया है। मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां उसी के पास हैं। अब तक के अध्ययन में हमने यह देखा कि सभी अविश्वासी नरक–दंड के भागी होंगे। यह सच है। प्रभु यीशु के संसार का न्याय करने हेतु वापिस आने के बाद सभी अविश्वासी सदा–सर्वदा के लिए नरक में डाल दिए जायेंगे।

लूका रचित सुसमाचार के सोलहवें अध्याय के उन्नीसवें से इक्तीसवें पदों को पढ़ने पर "अधोलोक" (हेड्स) का उल्लेख मिलता है। **लूका** के इस सुसमाचार के इस विवरण में एक धनी व्यक्ति तथा **लाजर** नामक एक कंगाल की कहानी पाई जाती है। इस विवरण से यह ज्ञात होता है कि अब्राहम उस धनी व्यक्ति को अधोलोक में देख तो सकता था, मगर उसके पास जा नहीं सकता था। अधोलोक दो

भागों में बंटा है। एक हिस्सा अग्नि और पीड़ा भरे नरक के समान है, जहां मरने के बाद सभी अविश्वासी जाते हैं। दूसरा हिस्सा फिर्दौस या पैराडाइज (इब्राहीम की गोद या स्वर्गिक वाटिका) कहलाता है। यह स्वर्ग जैसा स्थान है। मसीह के आगमन, उसके बलिदान एवं उसके पुनरुत्थान से पूर्व सभी विश्वासी अपनी मृत्यु के बाद यहीं जाते थे। मृतकों में से जी उठने के बाद जब प्रभु यीशु स्वर्ग पर उठा लिया गया, तब फिर्दौस में जितने लोग थे, वे सभी तथा मसीह के स्वर्गारोहण के बाद से मरने वाले सभी विश्वासी प्रभु के पास स्वर्ग जाते हैं।

न्यायकर्ता के रूप में अपने दर्शन द्वारा प्रभु यीशु ने जब यूहन्ना से कहा कि "अधोलोक" की कुंजी उसके पास है; तो इसका तात्पर्य यह था कि "अधोलोक" के सभी अविश्वासियों पर उसका ही अधिकार है और जब वह न्यायी के रूप में वापिस आएगा तो अधोलोक के सभी अविश्वासी न्याय के लिए हाजिर किए जायेंगे और तत्पश्चात सनातन दंड हेतु नरक में डाल दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त प्रभु ने यह भी कहा कि "मृत्यु" की कुंजी उसके पास है। सही समय पर सभी मृतक जन पुनः जीवित किए जायेंगे। अविश्वासी के रूप में मरने वाले लोगों के पुनः जीवित होने पर उनका न्याय किया जाएगा और तत्पश्चात अनन्तकालीन दंड के लिए वे नरक में डाल दिये जायेंगे। विश्वासी के रूप में मरने वाले लोग पुनः जीवित किए जाने पर (अपने प्राण व आत्मा के एकत्व में) सदा–सर्वदा तक प्रभु यीशु के साथ स्वर्ग में रहेंगे।

"इसलिए जो बातें तू ने देखी हैं, जो बातें हो रही हैं और जो बातें इनके पश्चात् होनेवाली हैं, उन्हें लिख ले" (प्रका0 1:19)। तब प्रभु ने यूहन्ना से तीन प्रकार की बातों को लिखने का निर्देश दिया: (1) "जो बातें तू ने देखी हैं"। यह बातें यूहन्ना ने प्रका0 1:10–18 में लिपिबद्ध की हैं। (2) "जो बातें हो रही हैं"। इन बातों

को उसने प्रकाशितवाक्य के अध्याय 2 से 3 में लिपिबद्ध किया है अर्थात् तत्कालीन एशिया की सातों कलीसियाओं को सम्बोधित संदेश। (3) "जो बातें इनके पश्चात् होने वाली हैं"। प्रकाशितवाक्य के चौथे अध्याय से लेकर अंतिम अध्याय तक लिपिबद्ध की गई बातें।

"उन सात तारों का रहस्य जो तूने मेरे दाहिने हाथ में देखे और सात स्वर्ण दीपदानों का रहस्य यह है: सात तारे, सात कलीसियाओं के दूत हैं, और वे सात दीपदान सात कलीसियाएं हैं" (प्रका0 1:20)। इसके बाद प्रभु यीशु ने यूहन्ना को **सात तारों** तथा **सात दीपदानों** का भावार्थ बताया। सातों तारे स्वर्गदूत हैं और सात दीपदान तत्कालीन एशिया की सात कलीसियाएं। स्वर्ण दीपदानों (अर्थात् कलीसियाओं) के मध्य प्रभु यीशु की यह उपस्थिति इस सच्चाई की याद दिलाती है कि कलीसिया सब विश्वासियों से मिलकर बनी है और मसीह में सब विश्वासी एक हैं। प्रभु की ऐसी उपस्थिति इस सच्चाई की भी याद दिलाती है कि प्रभु यीशु अपनी कलीसिया की देखरेख एवं सुरक्षा करते हुए सदैव हमारे साथ है। इतना ही नहीं बल्कि स्वर्गदूत भी परमेश्वर के सेवक हैं और मसीह के अधिकार की अधीनता में हैं। वह अपनी इच्छानुसार जैसा उचित समझता है, इन स्वर्गदूतों को अपने विश्वासियों के सेवार्थ उपयोग में लाता है (भज0 103:20)।

मुहरबंद पुस्तक

2

"इन बातों के पश्चात् मैंने दृष्टि की, और देखो, स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है। तुरही की ध्वनि के समान जो प्रथम आवाज मैंने सुनी, उसने कहा, 'यहां ऊपर आ, और मैं तुझे उन बातों को दिखाऊंगा जिनका इनके पश्चात् होना अवश्य है'। मैं तुरन्त आत्मा में आ गया, और देखो, स्वर्ग में एक सिंहासन रखा था और उस पर कोई बैठा हुआ था" (प्रका0 4:1–2)। प्रकाशितवाक्य के दूसरे और तीसरे अध्यायों में तत्कालीन एशिया की सातों कलीसियाओं के बारे में लिखवाने के पश्चात् प्रभु यीशु ने अपने दास यूहन्ना से कहा कि अब वह कलीसिया के उठा लिए जाने (रैप्ट्युअर) के बाद घटित होने वाली भावी बातों का दर्शन देगा। तब यूहन्ना ने स्वर्ग में एक सिंहासन देखा जिस पर प्रभु परमेश्वर विराजमान था। जैसा कि हम जानते हैं कि 'सिंहासन' किसी राजा–महाराजा के बैठने का एक खास स्थान होता है। स्वर्ग में सिंहासन पर विराजमान प्रभु परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी का सर्वोच्च अधिकारी है, उससे महान कोई और नहीं है। अन्य सभी इहलौकिक राजा (शासक) उसके अधिकार–सत्ता के नीचे हैं। हम (विश्वासीगण) राजाओं के राजा की संतान हैं। संभव है कि इहलौकिक जीवन के दौरान हमें कुछ बहुत ही कठिन परिस्थितियों से होकर गुजरना पड़े, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारा स्वर्गिक पिता सर्वोच्च सिंहासन पर विराजमान है और हम उसकी देखरेख में हैं।

"जो सिंहासन पर बैठा था उसके दाहिने हाथ में मैंने एक पुस्तक देखी जो भीतर–बाहर लिखी हुयी थी तथा सात मुहर लगाकर

बन्द की गई थी" (प्रका0 5:1)। यूहन्ना ने सर्वोच्च सिंहासन पर बैठे प्रभु परमेश्वर के दाहिने हाथ में सात मुहरों से बन्द एक पुस्तक देखी। जब हम किसी को पत्र भेजते हैं तो प्रायः उसे लिफाफे में रख कर लिफाफे का मुंह बन्द कर देते हैं और तब लिफाफे पर पता लिखने के बाद पत्र को उस व्यक्ति के पास भेज देते हैं। उस पत्र को खोलने का अधिकार केवल उसी व्यक्ति का होता है जिसके लिए वह भेजा गया है; अन्य किसी को वह पत्र खोलने का अधिकार नहीं होता।

"फिर मैंने एक बलवान स्वर्गदूत को देखा जो ऊँची आवाज से प्रचार कर रहा था, इस पुस्तक को खोलने और उसकी मुहरों को तोड़ने के योग्य कौन है" (प्रका0 5:2)? स्वर्गदूत ने पूछा कि इस पुस्तक को खोलने तथा इसकी मुहरों को तोड़ने के योग्य कौन है? यहां यह नहीं बताया गया है कि उस लेख में क्या लिखा है, लेकिन आगे पढ़ने से स्पष्ट है कि उसमें पृथ्वी पर परमेश्वर द्वारा भेजे गये भयानक न्याय–निर्णयों (प्रकोपों) का वर्णन है। अतः स्वर्गदूत ने कहा कि इस मुहर को खोलने तथा ईश्वरीय न्याय–दण्ड (प्रकोप) को लागू करने योग्य कौन है?

"पर स्वर्ग में या पृथ्वी पर या पृथ्वी के नीचे उस पुस्तक को खोलने और पढ़ने के योग्य कोई न मिला। इस पर मैं फूट–फूटकर रोने लगा, क्योंकि उस पुस्तक को खोलने या पढ़ने योग्य कोई न मिला। तब उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, मत रो! देख, यहूदा के कुल का वह सिंह जो दाऊद का मूल है, विजयी हुआ है, कि इस पुस्तक को और उसकी सात मुहरों को खोले" (प्रका0 5:3–5)। स्वर्ग अथवा पृथ्वी पर केवल एक ही व्यक्ति है जिसके पास उन सात मुहरों को तोड़ने और सुसमाचार को अस्वीकार करने वालों पर परमेश्वर का प्रकोप उड़ेलने का अधिकार है– यीशु मसीह। केवल

यीशु मसीह ही हमारे पाप के दंड–मूल्य स्वरूप मरा तथा मृत्यु, नरक एवं कब्र पर विजयी होकर हमारे उद्धार का द्वार खोल दिया। चूंकि हमारे उद्धार का मार्ग वही है अतः उसके प्राविधान को अस्वीकार करने वालों को दंडित (न्याय) करने का अधिकार भी केवल उसी के पास है। प्रभु यीशु को अपना उद्धारकर्ता नहीं मानना, उसे अपना न्यायी (ज़ज़) स्वीकार करना है। शुरू में यूहन्ना को ऐसा लगा जैसे कि उस पुस्तक की मुहर को खोलने योग्य कोई नहीं है, अतः वह रोने लगा। उस पुस्तक की मुहर को तोड़कर ईश्वरीय प्रकोप उड़ेलने योग्य व्यक्ति के तत्काल उपलब्ध नहीं होने के यूहन्ना ने दो अर्थ लगाए : (1) उद्धारकर्ता अभी तक (वापस) नहीं आया है, और (2) पाप अभी भी न्याय–रहित तौर पर अपना काम जारी रखेगा। इससे यूहन्ना अत्यधिक दुखित हुआ और रोने लगा। जब हम पवित्र आत्मा की अधीनता में जीवन जीते हैं तो पाप से नफरत करते हैं और मसीह के पुनः आगमन के आकांक्षी होते हैं। परन्तु शरीर के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर हम पाप के प्रति अनदेखी का रवैया अपनाते हैं और "पाप के क्षणिक सुख" का मजा भी लेते हैं (इब्रा0 11:25)।

"और मैंने सिंहासन और उन प्राचीनों के बीच में, चारो प्राणियों सहित, मानो एक बलि किया हुआ मेमना खड़ा देखा। उसके सात सींग और सात नेत्र थे। ये परमेश्वर की सात आत्माएं हैं जो समस्त पृथ्वी पर भेजी गयी थीं" (प्रका0 5:6)। इसके बाद यूहन्ना ने "चार प्राणियों", कुछ **प्राचीनों** तथा उनके मध्य "मानो एक बलि किया हुआ मेमना" देखा। इसी सच्चाई को यरदन नदी के पास, यीशु को आते देखकर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने इन शब्दों में व्यक्त किया: "देखो, परमेश्वर का मेमने जो जगत का पाप उठा ले जाता है" (यूह0 1:29)। प्रकाशितवाक्य के पहले अध्याय के दर्शन में प्रेरित

यूहन्ना ने मसीह यीशु को (न्यायकर्ता) ज़ज़ के रूप में देखा। लेकिन यहां भिन्न प्रकार की तस्वीर प्रस्तुत की गई है – मसीह यीशु उद्धारकर्ता के रूप में।

सात सींग और सात नेत्र वाले मेमने का दर्शन मसीह के बारे में और अधिक समझ प्राप्त करने में सहायक है। यूहन्ना ने यीशु को एक "बलि किए हुए मेमने" के रूप में देखा; जिसका भावार्थ यह है कि उस पर अभी भी मृत्यु के चिन्ह थे। यूहन्ना कहता है कि उस मेमने के सात सींग थे। बाइबॅल में "सात" की संख्या सिद्धता या पूर्णता की प्रतीक मानी जाती है, और जानवर की सींग अधिकार–सत्ता की प्रतीक। इसका अर्थ यह हुआ कि मसीह यीशु सब चीजों (व्यक्तियों व शक्तियों) के ऊपर सर्वोच्च अधिकारी (सर्वसत्ताधारी) है। यूहन्ना ने उस मेमने की सात आंखें भी देखीं जिन्हें प्रभु द्वारा पृथ्वी पर भेजी गई आत्माएं कहा गया है। यहां भी सात की संख्या सिद्धता या पूर्णता की परिचायक है। तात्पर्य यह है कि प्रभु यीशु को हमारे जीवन की सभी बातों की पूर्ण व सही जानकारी है; अतएव वह सब के बारे में सही व सिद्ध न्याय–निर्णय देने में पूर्णतः सक्षम है।

"उसने आकर उसके दाहिने हाथ से जो सिंहासन पर बैठा था, वह पुस्तक ले ली। जब उसने पुस्तक ले ली तो वे चार प्राणी और चौबीस प्राचीन उस मेमने के सामने गिर पड़े। उनमें से प्रत्येक के हाथ में वीणा और धूप से भरे सोने के कटोरे थे, जो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं। और उन्होंने यह नया गीत गया: 'तू इस पुस्तक के लेने और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है, क्योंकि तू ने वध होकर अपने लहू से प्रत्येक कुल, भाषा, लोग और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है। और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिए एक राज्य

और याजक बनाया और वे पृथ्वी पर राज करेंगे ' " (प्रका0 5:7–10)। जब पिता परमेश्वर के हाथ से मसीह यीशु ने उस मुहरबन्द **पुस्तक** को अपने हाथ में ले लिया, तब चारों प्राणी तथा चौबीसों प्राचीन एक "नया गीत" गाने लगे। अपने इस नये गीत के द्वारा वे मसीह यीशु की स्तुति प्रशंसा कर रहे थे क्योंकि वही बलि होकर सभी विश्वासियों को उद्धार प्रदान किया है और केवल वही उस मुहरबंद पुस्तक को खोलने एवं उसके अनुसार न्याय–निर्णयों को लागू करने में सक्षम है। इस घटना व समय के लिए स्वर्ग भी प्रतीक्षा कर रहा है, अर्थात् वह समय जबकि समस्त पाप एवं सारे पापियों का न्याय होगा तथा जगत का सच्चा शासक मसीह अपना अधिकार ग्रहण करेगा। जब प्रभु यीशु मसीह उस मुहरबंद पुस्तक की मुहरों को खोलेगा तब सारा स्वर्ग उसकी स्तुति–प्रशंसा करने लगेगा। यूहन्ना आगे लिखता है कि उसने प्राचीनों के हाथों में 'पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं से भरे कटोरे' भी देखे। पिन्तेकुस्त के दिन से कलीसिया के उठाए जाने (रैप्टुअॅर) तक परमेश्वर की समस्त संतानें प्रभु यीशु की पुनः वापसी की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करती रही हैं जबकि वह अपने विश्वासियों को लेने तथा समस्त पाप का न्याय (दंडित) करने वापस आएगा। स्मरण रहे, हम एक पतित संसार व श्रापित देह में रह रहे हैं, और हममें से अधिकतर लोगों के लिए यह पार्थिव जीवन एक कठिन जीवन है। प्रायः अपनी आशा के आधार प्रभु यीशु पर भरोसा रखते हुए हमें प्रार्थना द्वारा परमेश्वर की ओर ही देखना पड़ता है। ऐसी सच्ची प्रार्थनाओं को प्रेरित यूहन्ना "धूप से भरे सोने के कटोरे" कहता है। दाऊद ने भी इसी तरह की बात कही है: "मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगंधित धूप ठहरे" (भज0 141:2)। प्रेरित यूहन्ना अपने दर्शन के बारे में आगे लिखता है कि वे **चारों प्राणी** तथा चौबीसों **प्राचीन मेमने** के समक्ष गिरकर यह गुणगान करने लगे – "तू ने... प्रत्येक कुल, भाषा,

लोग और जाति (अर्थात् प्रत्येक जनजातीय, प्रत्येक भाषाई, प्रत्येक राष्ट्रीय और प्रत्येक राजनीतिक समूह के लोगों) में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है"।

"फिर मैंने देखा, तो सिंहासन, प्राणियों और प्राचीनों के चारों ओर बहुत से स्वर्गदूतों का शब्द सुना, जिनकी संख्या लाखों और करोड़ों में थी और वे ऊंची आवाज से कह रहे थे, 'बध किया हुआ मेमना सामर्थ्य, धन, बुद्धि, शक्ति, आदर, महिमा और धन्यवाद के योग्य है'। फिर मैंने सब सृजी हुई वस्तुओं को जो स्वर्ग में पृथ्वी पर, पृथ्वी के नीचे और समुद्र में हैं, अर्थात् उनमें की सब वस्तुओं को यह कहते सुना, 'जो सिंहासन पर बैठा है उसका, और मेमने का धन्यवाद और आदर, महिमा, तथा राज्य युगानुयुग रहे'। और चारों प्राणी 'आमीन' कहते रहे तथा प्राचीनों ने दंडवत करके उपासना की" (प्रका0 5:11–14)। यहां तेरहवें पद पर विशेष ध्यान दें कि जब प्रभु यीशु उस मुहरबंद पुस्तक को खोलने आएगा तब स्वर्ग, पृथ्वी, समुद्र तथा पृथ्वी के नीचे के समस्त प्राणी (समस्त सृजित चीजें) स्तुति–प्रशंसा के साथ यह अंगीकार करेंगे कि परमेश्वर पिता एवं मसीह (मेमना) ही सारी स्तुति व आराधना के योग्य हैं। उस समय ख्रिष्तीय विश्वासियों का ठट्ठा उड़ाने वाले, तिरस्कार करने वाले तथा उन्हें सताने वाले भी – चाहे वह शैतान हो, दुष्टात्माएं हों या अन्य कोई सृजित प्राणी हों – प्रभु परमेश्वर की महिमा एवं सामर्थ्य के अधीन घुटना टेकेंगे।

मुहरों का खोला जाना

3

इससे पहले के पाठ में हमने यह देखा कि प्रेरित यूहन्ना को प्राप्त दर्शन के अनुसार सात मुहरों से मुहरबंद पुस्तक को खोलने और समस्त अविश्वासियों पर परमेश्वर का न्याय–निर्णय यानि उसका प्रकोप उड़ेलने में केवल प्रभु यीशु मसीह ही सक्षम है। अब हम प्रकाशितवाक्य के छठवें अध्याय के अनुसार प्रभु यीशु द्वारा अपनी कलीसिया को लेने वापस आने पर घटित होने वाली घटनाओं के बारे में विचार करेंगे। *"जब मैंने देखा कि मेमने ने उन सात मुहरों में से एक को खोला, तब मैंने उन चार प्राणियों में से एक को गर्जन के समान शब्द में कहते सुना, 'आ'!"* (प्रका0 6:1)। प्रभु यीशु ने सात मुहरों से मुहरबंद उस पुस्तक की पहली मुहर को जैसे ही खोला, तत्काल एक प्राणी ने गर्जन समान तेज आवाज़ में यह कहा कि आओ, देखो! याद रहे कि यह अविश्वासी लोगों पर परमेश्वर के न्याय–दंड की शुरुआत का वक्त होगा। इसके बाद पृथ्वी पर मसीह का शासन स्थापित होगा। यह वह समय होगा जिसके लिए सारा स्वर्ग सदियों से प्रतीक्षा कर रहा था।

"मैंने दृष्टि की, और देखो, एक श्वेत घोड़ा था, और जो उस पर बैठा था वह धनुष लिए हुए था । उसे एक मुकुट दिया गया, और वह जय प्राप्त करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त करे" (प्रका0 6:2)। जब पृथ्वी के अविश्वासियों पर ईश्वरीय न्याय–दंड रूपी प्रकोप की मुहरें मसीह द्वारा खोलना शुरू की जाएंगी, तब एक नये युग का प्रारम्भ होगा। तब हम अनुग्रह के युग में नहीं रह जाएंगे बल्कि न्याय–दंड की प्रधानता होगी। यूहन्ना के दर्शन की बातें इस

सच्चाई को दर्शाती हैं कि उस समय धरती पर मनुष्य के शासन का अधिकार परमेश्वर द्वारा समाप्त कर दिया जाएगा, और यह अधिकार मसीह को प्रदान किया जाएगा।

"जब उसने दूसरी मुहर खोली तो मैंने दूसरे प्राणी को यह कहते सुना, 'आ!' तब लाल रंग का एक और घोड़ा निकला। उसके सवार को यह अधिकार दिया गया कि वह पृथ्वी पर से मेल–मिलाप उठा ले कि लोग एक दूसरे को घात करें और उसे एक बड़ी तलवार दी गई" (प्रका0 3–4)। अब दूसरी मुहर के खोले जाने पर ध्यान दें। जब प्रभु यीशु द्वारा दूसरी मुहर तोड़ी जाएगी तो इस पृथ्वी पर से शांति व मेल–मिलाप उठा लिया जाएगा और मनुष्य एक दूसरे को घात करेंगे। शांति व मेल–मिलाप उठा लिए जाने की बात यह इशारा करती है कि अभी वर्तमान काल में इस धरती पर शांति (की उपस्थिति) है। वर्तमान काल के सारे लड़ाई–झगड़ों व मारकाट के बावजूद इस पृथ्वी पर अभी भी शांति उपस्थित है; लेकिन जब इसे उठा लिया जाएगा तब यहां की हालत कितनी बुरी होगी? कितना गम्भीर विचार! इससे एक अन्य बात स्पष्ट हो जाती है कि वर्तमान जगत में हम (कुछ हद तक) जितनी भी शांति–व्यवस्था का आनन्द ले पा रहे हैं, इसका सम्पूर्ण श्रेय पिता परमेश्वर को जाता है जो इस शांति–व्यवस्था को बनाए रखने की अनुमति दिए है (दू0 थिस्स0 2: 6–7)

"जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे प्राणी को यह कहते सुना, 'आ'!" तब मैंने दृष्टि की, और देखो, एक काला घोड़ा था और उसके सवार के हाथ में एक तराजू था। मैंने उन चारों प्राणियों के मध्य से मानो एक शब्द को यह कहते सुना, 'एक दीनार का किलो भर गेहूं तथा एक दीनार का तीन किलो जौ, पर तेल और

दाखरस की हानि मत करना" (प्रका0 6:5–6)। जब प्रभु परमेश्वर द्वारा इस पृथ्वी पर "शांति व मेल–मिलाप" उठा लिया जाएगा, तब यहां की दशा इतनी खराब हो जाएगी जितनी कभी नहीं हुई थी। प्रभु यीशु द्वारा तीसरी मुहर खोलने पर इस दुनिया में अनाज की बड़ी भारी कमी होगी। खाने की वस्तुएं इतनी मंहगी व दुर्लभ हो जाएंगी कि पूरे दिन की मजदूरी खर्च करके शायद एक दिन के खाने का आटा मात्र खरीदा जा सके – नमक, तेल, साग–सब्जी वगैरह का खर्च अलग। भावार्थ यह है कि ऐसी परिस्थिति में लोग अपने परिवार के लिए जरूरी भोजन का प्रबन्ध करने में असमर्थ होंगे। नतीजतन भुखमरी का बोलबाला होगा।

"जब उसने चौथी मुहर खोली, तो मैंने चौथे प्राणी का शब्द यह कहते सुना, 'आ!' मैंने दृष्टि की, और देखो, एक हल्के पीले रंग का घोड़ा था; उसके सवार का नाम था 'मृत्यु'; और अधोलोक उसका अनुसरण कर रहा था। उन्हें पृथ्वी के एक चौथाई भाग पर यह अधिकार दिया गया था कि ***तलवार, दुर्भिक्ष, महामारी और पृथ्वी के हिंसक पशुओं द्वारा संहार करें"*** (प्रका0 6:7–8)। चौथी मुहर खोले जाने पर उस समय पृथ्वी पर रह रहे लोगों में से एक चौथाई लोग मृत्यु के शिकार हो जायेंगे: लड़ाई–झगड़े, भुखमरी, बीमारी और हिंसक पशुओं द्वारा। उस समय इतने अधिक लोग मरेंगे कि इतने कम समय में इससे पूर्व इतने लोग कभी नहीं मरे थे।

"जब उसने पांचवी मुहर खोली, तो मैंने वेदी के नीचे उनके प्राणों को देखा जो परमेश्वर के वचन तथा उसकी निरन्तर गवाही के कारण वध किए गए थे। वे उच्च स्वर से पुकार कर कह रहे थे, 'हे पवित्र और सच्चे प्रभु, तू कब तक न्याय न करेगा? तथा कब तक पृथ्वी के निवासियों से हमारे रक्त का प्रतिशोध न लेगा?' उनमें से

प्रत्येक को सफेद चोगा दिया गया, और उनसे कहा गया, 'थोड़ी देर तक और विश्राम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दासों और भाइयों की, जो तुम्हारे सदृश वध होने वाले हैं, गिनती पूरी न हो जाए'" (प्रका0 6:9–11)। प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि मसीह के विश्वासियों को सताने वाले बड़ी आसानी से न्याय–दंड से बच निकलते हैं और उनका कुछ नहीं होता। परन्तु परमेश्वर के वचन से सुस्पष्ट है कि उसकी नजर से कोई नहीं छिप सकता। शहीदों की संख्या पूर्ण हो जाने पर परमेश्वर अपने लोगों को सताने वालों को दंडित करेगा। यहां यह भी इशारा मिलता है कि संभवतः क्लेश–काल के दौरान भी कुछ लोग उद्धार पाएंगे। यह परमेश्वर के अनुग्रह के कारण ही होगा कि क्लेश–काल के दौरान सुसमाचार सुनने, विश्वास करने और उद्धार पाने का मौका मिले।

"जब उसने छठवीं मुहर खोली, तब मैंने देखा कि एक बड़ा भूकम्प हुआ, और बाल से बने कम्बल के समान सूर्य काला और सम्पूर्ण चन्द्रमा लहू के सदृश हो गया। आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आंधी से हिलकर अंजीर के वृक्ष से कच्चे फल गिर पड़ते हैं। आकाश फट कर ऐसे हट गया जैसे चर्म–पत्र लिपट जाता है, और प्रत्येक पर्वत तथा द्वीप अपने स्थान से हट गया" (प्रका0 6:12–14)। इसके बाद यूहन्ना ने अपने दर्शन की बातों को लिखते हुए यह कहा कि छठवीं मुहर तोड़ने पर सारे जगत में एक भीषण भूकम्प आएगा। सूर्य काला हो जाएगा, आकाश के तारे पृथ्वी पर गिरने लगेंगे, आकाश फटकर हट जाएगा और पर्वत एवं द्वीप भी अपने स्थान से हट जाएंगे। मनुष्यों पर इसका कैसा असर होगा? *"तब पृथ्वी के राजा, प्रधान, सेनापति, धनवान, सामर्थी, और प्रत्येक दास और प्रत्येक स्वतंत्र व्यक्ति पहाड़ों की गुफाओं और चट्टानों में*

जा छिपे। और पर्वतों तथा चट्टानों से कहने लगे, 'हम पर गिर पड़ो और हमें उसकी दृष्टि से जो सिंहासन पर बैठा है, तथा मेमने के प्रकोप से छिपा लो, क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ गया है, और कौन है जो उनका सामना कर सकता है" (प्रका0 6:15–17)। यहां यूहन्ना के शब्दों पर ध्यान दें। वह कहता है कि पृथ्वी के सभी राजागण, नेतागण, धनवान तथा अन्य बड़े–बड़े लोग पहाड़ों और गुफाओं की ओर भागकर छिपने की भरपूर कोशिश करेंगे। परमेश्वर के प्रकोप से छिपने के लिए वे पहाड़ों और गुफाओं से विनती करेंगे कि वे उनके ऊपर गिर पड़ें। तात्पर्य यह है कि उस समय की मुसीबतें व परेशानियां इतनी भीषण होंगी कि लोग पूर्णतः भयग्रस्त होंगे। तब उन्हें यह अनुभव होगा कि संसार का अन्त आ गया है और परमेश्वर के प्रकोप व न्याय–दण्ड का समय भी। तब वे यह कहकर चिल्लाएंगे कि "परमेश्वर के न्याय–दंड के समक्ष कौन ठहर सकता है?" जवाब बिल्कुल स्पष्ट हैः परमेश्वर के न्याय–दंड के समक्ष कोई नहीं ठहर सकता। सभी अविश्वासियों का न्याय होगा, और सभी दोष–दंड पाएंगे। ईश्वरीय न्याय–दंड से कोई नहीं भाग सकता। यदि हम विश्वासियों को परमेश्वर के अनुग्रह का ज्ञान नहीं हुआ होता तो हम भी अविश्वासियों की भांति परमेश्वर के प्रकोप के भय में होते। परन्तु विश्वासियों की अवस्था बिल्कुल भिन्न है। यद्यपि हम भी उसके योग्य नहीं थे, फिर भी मसीह के महाकार्य और उस पर विश्वास के द्वारा अब हम परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह, दया, उसकी स्वीकार्यता और उसकी क्षमा के पात्र हो गए हैं। निःसंदेह अब हम उसकी संतान हैं, और वह हमारा स्वर्गिक पिता है।

एक लाख चौवालीस हजार

4

प्रकाशितवाक्य के छठवें अध्याय में हमने यह देखा कि महाक्लेश के दौरान प्रभु परमेश्वर अपने न्याय–दंड के रूप में अविश्वासी संसार पर छः भयानक प्रकोप उंडेलेगा। अब हम क्लेशकाल के दौरान प्रभु यीशु पर विश्वास करने वालों के बारे में विचार करेंगे।

"इसके पश्चात् मैंने चार स्वर्गदूतों को पृथ्वी के चार कोनों पर खड़े देखा, जो पृथ्वी की चारों हवाओं को थामे हुए थे कि पृथ्वी, समुद्र अथवा किसी वृक्ष पर हवा न चले। फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को जीवित परमेश्वर की मुहर लिए हुए पूर्व से ऊपर आते देखा। उसने उन चारों स्वर्गदूतों से, जिन्हें पृथ्वी और समुद्र को हानि पहुंचाने का अधिकार दिया गया था, ऊँची आवाज़ से पुकार कर कहा, 'जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथों पर मुहर न लगा लें, तब तक पृथ्वी, समुद्र या वृक्षों को हानि न पहुंचाना'। तब मैंने उन लोगों की संख्या सुनी जिन पर छाप दी गई थी, अर्थात् एक लाख चौवालीस हजार। इस्राएली संतानों के प्रत्येक गोत्र में से इन पर मुहर लगाई गई थी" (प्रका0 7:1–4)। यूहन्ना ने लिखा है कि पृथ्वी के चार कोनों पर चार स्वर्गदूत खड़े किए जाएंगे जिन्हें प्रकृति के नियमों में व्यवधान डालने और हानि पहुंचाने का अधिकार प्राप्त होगा। प्रकृति के नियमों में व्यवधान आने से पृथ्वी पर तमाम प्रकार की गड़बड़ी, अव्यवस्था एवं कठिनाईयां फैल जाएंगी। परन्तु हानि पहुंचाने के लिए तैनात इन स्वर्गदूतों के कुछ करने से पहले एक अन्य स्वर्गदूत उन्हें तब तक कुछ भी हानि करने से रुकने के लिए कहेगा

जब तक कि "परमेश्वर के दासों के माथों पर मुहर" नहीं लगा दी जाती। ये परमेश्वर के दास कौन हैं? एक लाख चौवालीस हजार इस्राएली, जो मसीह यीशु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करेंगे। यह तथ्य भी परमेश्वर के अनुग्रह की महानता की साक्षी है। जैसे महाजलप्रलय के समय, जब तक नूह सुरक्षित जलयान में नहीं पहुंच गया तब तक जलप्रलय प्रारम्भ नहीं हुआ; उसी प्रकार परमेश्वर महाक्लेश तब तक नहीं आने देगा जब तक कि उसकी कलीसिया सुरक्षित स्वर्ग में नहीं उठा ली जाती। इसीलिए पृथ्वी पर हानि पहुंचाने के लिए अधिकृत चारों स्वर्गदूतों को तब तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया है जब तक कि परमेश्वर के चुने हुए एक लाख चौवालीस हजार इस्राएली लोगों के माथों पर ईश्वरीय सुरक्षा एवं स्वामित्व की मुहर नहीं लगा दी जाती, जिन्हें महाक्लेश से बचाया जाना है। जब इस्राएली लोग मिस्र की गुलामी में थे, तब भी इसी प्रकार हुआ – अर्थात् मिस्रियों पर परमेश्वर की ओर से भेजी गई महामारियां आईं, किन्तु परमेश्वर की प्रजा (इस्राएली) सुरक्षित रही। **रोमियों** की पत्री के ग्यारहें अध्याय में पौलुस यह दर्शाता है कि परमेश्वर एक दिन इस्राएलियों को पुनः इस पृथ्वी पर अपनी विशिष्ट साक्षी के रूप में इस्तेमाल करेगा।

"इसके पश्चात् मैंने दृष्टि की, और देखो, प्रत्येक जाति, समस्त कुल, लोग और भाषा में से लोगों की एक विशाल भीड़ जिसे कोई गिन नहीं सकता था श्वेत वस्त्र पहने तथा हाथों में खजूर की डाली लिए सिंहासन और मेमने के सामने खड़ी थी, और लोग ऊँची आवाज से पुकार कर कह रहे थे, 'सिंहासन पर विराजमान हमारे परमेश्वर और मेमने से ही उद्धार है!' सिंहासन के, प्राचीनों के, और चारों प्राणियों के चारों ओर समस्त स्वर्गदूत खड़े हुए थे। उन्होंने

सिंहासन के सामने मुंह के बल गिरकर और यह कहकर परमेश्वर की वन्दना की, 'आमीन। हमारे परमेश्वर की स्तुति, महिमा, ज्ञान, धन्यवाद, आदर, सामर्थ्य और शक्ति युगानुयुग हो। आमीन'।" (प्रका0 7:9–12)। एक लाख चौवालीस हजार लोगों के दृश्य को देखने के बाद यूहन्ना ने एक दूसरी विशाल भीड़ को देखा जिसकी गिनती करना असम्भव था। असंख्य लोगों की यह विशाल भीड़ प्रत्येक राजनैतिक समूह, प्रत्येक जातीय समूह, प्रत्येक भाषाई समूह तथा संसार के प्रत्येक कुल से थी। इस भीड़ के लोग श्वेत वस्त्र धारण किए हुए थे और हाथ में खजूर की डाली लिए हुए थे। श्वेत वस्त्र इस सच्चाई को दर्शाता है कि उनके पाप क्षमा कर दिए गए हैं और परमेश्वर के समक्ष वे धर्मी व निर्दोष ठहराए गए हैं। खजूर की डालियां विजय–प्रतीक हैं और यरूशलेम में मसीह के विजय–प्रवेश को दर्शाती हैं। इस भीड़ के हाथों में खजूर की डाली होना यह प्रकट करता है कि वे पाप एवं न्याय दंड से छुटकारा पाए (विजयी हुए) हैं, और महाक्लेश से बचकर मसीह एवं पिता परमेश्वर की उपस्थिति में हैं। यह दिन परमेश्वर की स्तुति, प्रशंसा व आराधना का महान दिन होगा।

"इसके पश्चात् प्राचीनों में से एक ने मुझ से पूछा, 'ये जो श्वेत वस्त्र धारण किए हुए हैं, कौन हैं, और कहां से आए हुए हैं'? मैंने उत्तर दिया, 'हे मेरे प्रभु तू ही जानता है।' उसने मुझ से कहा, 'ये वे हैं, जो उस महाक्लेश में से निकल कर आए हैं। इन्होंने अपने वस्त्र मेमने के लहू में धोकर श्वेत किए हैं'।" (प्रका0 7:13–14)। अब प्रेरित यूहन्ना यह स्पष्ट करता है कि यह कैसे लोगों की भीड़ होगी। यह महाक्लेश के दौरान बचाए गए लोगों की भीड़ होगी। आजकल

एक रोचक बात यह देखने को मिलती है कि अनेक कलीसियाएं तथा मसीही संस्थाएं संसार के सभी लोगों तक सुसमाचार प्रचार करने का लक्ष्य बनाती (या दावा करती) हैं। सवाल यह है कि क्या ऐसे लक्ष्य निर्धारित करना बाइबॅल–सम्मत है? यूहन्ना को प्राप्त प्रकाशना के अनुसार केवल महाक्लेश के दौरान ही सभी जातियों, सभी भाषाई समूहों, सभी राष्ट्रों एवं संसार के सभी कुलों तक सुसमाचार संदेश पहुंचाने का लक्ष्य पूर्ण होगा। ध्यान दें, यह तब होगा जब कि कलीसिया ऊपर उठा ली जाएगी। इसका मतलब यह हुआ कि वे एक लाख चौवालीस हजार लोग इस संसार के सभी लोगों, सभी जातियों, सभी भाषाई समूहों तथा सभी कुलों को सुसमाचार सुनाएंगे। बेशक प्रभु परमेश्वर अपनी कलीसिया से यह अपेक्षा रखता है कि वह सुसमाचार सुनाए–सिखाए; लेकिन ऐसे लक्ष्य निर्धारित करने से दूर रहे जो बाइबॅल के अनुसार नहीं होते। शारीरिकता का जीवन व्यतीत करने पर अपनी इच्छानुसार योजनाएं बनाने तथा इन्हें ईश्वरीय इच्छा मानकर पूरा करने के प्रयास में व्यस्त होने की आजमाइश में फंसना आसान होता है। ऐसी कलीसियाई गतिविधियां बाहर से आत्मिक प्रतीत होती हैं, किन्तु आन्तरिक तौर पर शारीरिकतापूर्ण इच्छाओं व अभिलाषाओं को बढ़ावा देने का काम करती हैं।

"इस कारण ये परमेश्वर के सिंहासन के सामने हैं और उसके मंदिर में दिन–रात उसकी सेवा करते हैं। जो सिंहासन पर बैठा है वह उन पर अपनी छाया करेगा। वे फिर कभी भूखे व प्यासे न होंगे; उन पर न धूप और न ही तपन होगी, क्योंकि मेमना जो सिंहासन के मध्य है, उनका चरवाहा होगा और जीवन जल के

सोतों के पास वह उनकी अगुवाई करेगा, और परमेश्वर उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा" (प्रका0 7:15–17)। महाक्लेश के दौरान बचाई जाने वाली भीड़ में परमेश्वर के प्रकोप तथा ख्रीष्ट–विरोधी एवं उसके अनुयायिओं द्वारा घोर सतावट रूपी कठिनाइयों के मध्य से बचाए गए लोग होंगे। इस जमीन पर रहते हुए उन्हें खाना, पानी एवं शरण स्थान का इतना अधिक अभाव था कि वे अपनी कठिनाइयों के मारे रो रहे थे। बहरहाल, स्वर्ग में प्रवेश करते ही उनकी भूख–प्यास, शरण–स्थान, रोने–परेशान होने की सारी समस्यायें समाप्त हो जायेंगी; क्योंकि हमारा अनुग्रहकारी उद्धारकर्ता (अर्थात् परमेश्वर का मेमना) जीवन–जल के सोतों के पास उनकी अगुवाई करते हुए उनका भरण–पोषण करेगा और उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा।

सातवीं मुहर का रहस्य

5

"जब उसने सातवीं मुहर खोली तब स्वर्ग में आधे घंटे तक सन्नाटा छा गया" (प्रका0 8:1)। मुहरबंद पुस्तक की छह मुहरों के प्रभु यीशु द्वारा तोड़े जाने पर संसार में आने वाली विपत्तियों से अधिक भयानक विपत्तियां तब आईं जब उसने सातवीं मुहर खोली। प्रकाशितवाक्य के चौथे–पांचवे अध्यायों के आधार पर स्वर्गिक दृश्य की कल्पना करें कि पिता परमेश्वर अपने सिंहासन पर विराजमान है और उसके साथ मेमना तथा उसके चहुंओर वे चौबीसों प्राचीन, चारों प्राणी तथा असंख्य स्वर्गदूत एवं कलीसिया उपस्थित हैं। वे सब हरेक जाति, भाषा, राष्ट्र व कुल से लोगों का उद्धार करने के लिए पिता परमेश्वर को स्तुति–प्रशंसा के साथ दंडवत् कर रहे थे। तब प्रभु यीशु (मेमना) ने सातवीं मुहर को खोला। उसके उस मुहर के खोलते ही लगभग आधे घंटे के लिए पूरे स्वर्ग में सन्नाटा छा गया। उस मुहरबंद पुस्तक की सातवीं मुहर तोड़ने के समय प्रभु परमेश्वर दया से न्याय–दंड की ओर अग्रसर होगा। यह बहुत ही गम्भीर एवं महत्वपूर्ण वक्त होगा।

"तब मैंने सात स्वर्गदूत देखे जो परमेश्वर के समक्ष खड़े रहते हैं, और उन्हें सात तुरहियां दी गईं। तब सातों स्वर्गदूत जिनके पास सात तुरहियां थीं उन्हें फूंकने के लिए तैयार हुए" (प्रका0 8: 2, 6)। यूहन्ना ने अपने इस स्वर्गिक दर्शन में यह देखा कि प्रभु यीशु द्वारा उस पुस्तक की सातवीं मुहर खोलते ही सात स्वर्गदूतों को सात तुरहियां दी गईं। तब वे सातों स्वर्गदूत उन तुरहियों को फूंकने के लिए तैयार हुए। प्रत्येक स्वर्गदूत द्वारा तुरही फूंकने पर एक नई आपदा (न्याय–दंड) आई।

"पहिले ने तुरही फूंकी, और लहू से मिश्रित ओले व आग उत्पन्न हुए, जो पृथ्वी पर फेंक दिए गए। इस से पृथ्वी की एक तिहाई तथा वृक्षों की एक तिहाई भस्म हो गई, तथा सारी घास भी भस्म हो गई। दूसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, और मानो आग से जलती हुई महापर्वत के सदृश कोई वस्तु समुद्र में डाल दी गई, जिस से समुद्र का एक तिहाई लहू हो गया। समुद्र के एक तिहाई प्राणी मर गए, और जहाज़ों की एक तिहाई नष्ट हो गई। तीसरे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो एक विशाल तारा मशाल के सदृश जलता हुआ आकाश से गिरा, और वह नदियों और जल के सोतों की एक तिहाई पर जा गिरा। वह तारा नागदौना कहलाता है। इससे जल का एक तिहाई नागदौना हो गया। इस जल के कड़ुवे हो जाने के कारण बहुत–से मनुष्यों की मृत्यु हो गई। चौथे स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी तो सूर्य की एक तिहाई, चन्द्रमा की एक तिहाई तथा तारों की एक तिहाई पर विपत्ति आई, जिस से इनका एक तिहाई अन्धकारमय हो गया कि दिन का एक तिहाई और वैसे ही रात्रि का भी एक तिहाई प्रकाशमान न हो। जब मैंने फिर देखा तो आकाश के बीच में एक उकाब को उड़ते और ऊँची आवाज़ में यह कहते सुना, 'उन तीन स्वर्गदूतों के तुरही के शब्दों के कारण, जिनका फूंका जाना अभी शेष है, पृथ्वी के रहनेवालों पर हाय, हाय, हाय'" (प्रका0 8:7–13)! रोचक है कि पहली बार तुरहियों के फूंके जाने पर आने वाली विपत्तियों (न्याय–दंड) से परमेश्वर की सृष्टि की एक तिहाई चीजें नष्ट हो जाएंगी – सूर्य, चन्द्रमा, तारे एवं पृथ्वी की अन्य तमाम चीजें (मनुष्यों को छोड़कर)। आदि में परमेश्वर ने मनुष्य के प्रति अपने प्रेम एवं उसकी देखभाल में सुविधा के लिए यह सब रचा। आगे चलकर मनुष्य ने सृष्टिकर्ता के स्थान पर सृजित वस्तुओं को पूजना पसन्द किया और सृष्टि की चीजों के लिए परमेश्वर के प्रति अकृतज्ञ

(नमकहराम) हो गया। अतः कोई आश्चर्य नहीं कि प्रथम चार ईश्वरीय दंडादेशों (विपत्तियों) द्वारा सृष्टि की वह एक तिहाई चीजें नष्ट कर दी जाएंगी जिन्हें परमेश्वर ने मानव की सुविधा के लिए रचा था। इन चारों विपत्तियों के बाद एक उड़ता हुआ स्वर्गदूत संसार के लिए यह घोषणा करेगा कि इससे बढ़कर एवं भयानक दंडादेश (आपदाएं) आना अभी शेष है।

"जब पांचवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तो मैंने स्वर्ग से पृथ्वी पर एक तारा गिरता हुआ देखा ; और उसे अथाह कुण्ड की कुंजी दी गई" (प्रका0 9:1)। यहां "गिरता हुआ तारा" कोई भौतिक तारा नहीं है, बल्कि स्वर्गदूत जैसा एक प्राणी। कुछ लोगों का विचार है कि यहां **"तारा" श**ब्द शैतान के लिए प्रयोग किया गया है जो कभी "भोर का तारा" कहलाता था; और स्वर्ग से नीचे गिराया गया था। अन्य कुछ लोगों का विचार है कि इस पद का "तारा" शब्द शैतान के किसी दूत के लिए प्रयुक्त हुआ है। बहरहाल, इस प्राणी को "अथाह कुण्ड" को खोलकर और अधिक विपदाएं लाने का अधिकार दिया जायेगा। ऐसा प्रतीत होता है कि "अथाह कुण्ड" अधोलोक का ही एक हिस्सा है।

"उसने अथाह कुण्ड को खोला, और उस कुण्ड का धुआं बड़ी भट्ठी के धुएं के समान निकला। सूर्य और वायुमण्डल दोनों उस कुण्ड के धुएं से अंधकारमय हो गए। इस धुएं में से पृथ्वी पर टिड्डियां निकलीं। उनको ऐसी शक्ति दी गई जैसी पृथ्वी के बिच्छुओं में होती है। उन्हें आदेश दिया गया कि वे न तो पृथ्वी की घास, न कोई हरी वस्तु, न किसी वृक्ष को हानि पहुंचाएं, परन्तु उन्हीं मनुष्यों को हानि पहुंचाएं जिनके माथों पर परमेश्वर की मुहर नहीं है। उन्हें किसी को मार डालने की नहीं, वरन् पांच माह तक घोर पीड़ा देने की अनुमति दी गई थी। यह एक ऐसी पीड़ा थी जैसी बिच्छू के डंक मारने से मनुष्य को होती है। उन दिनों मनुष्य मृत्यु की खोज करेंगे,

पर पाएंगे नहीं। वे मृत्यु की अभिलाषा तो करेंगे परन्तु मृत्यु उनसे दूर भागेगी। इन टिड्डियों का स्वरूप युद्ध के लिए तैयार किए गए घोड़ों जैसा था। उनके सिरों पर मानो स्वर्ण–मुकुट थे, और उनके मुख मनुष्यों के मुख जैसे थे। उनके बाल स्त्रियों के बाल के समान तथा उनके दांत सिंहों के दांत के समान थे। उनके कवच लोहे के कवच जैसे थे। उनके पंखों की आवाज ऐसी थी जैसी रथों और युद्ध में जाते हुए बहुत–से घोड़ों के दौड़ने से होती है। उनकी पूंछे बिच्छुओं की सी थीं। उनमें डंक थे। उनकी पूंछों में मनुष्यों को पांच माह तक पीड़ा देने की शक्ति थी। उन पर एक राजा था जो अथाह कुण्ड का दूत था। इब्रानी भाषा में उसका नाम अबद्योन और यूनानी में अपुल्लयोन है। पहिली विपत्ति बीत चुकी। इसके पश्चात दो विपत्तियां और आने वाली हैं" (प्रका0 9:2–12)। पहले चार दंडादेशों (महामारियों) का प्रत्यक्षतः सृजित चीजों पर असर पड़ा, लेकिन पांचवी महामारी (दंडादेश) ने प्रत्यक्षतः मनुष्य को प्रभावित किया। यूहन्ना लिखता है कि इन टिड्डियों को सिर्फ उन्हीं मनुष्यों को डसना था जिनके "माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं है"। यहां फिर मिस्र में इस्राएलियों के साथ ईश्वरीय व्यवहार जैसी बात पाई जाती है, अर्थात् परमेश्वर द्वारा भेजी गई महामारियां केवल मिस्रियों पर आईं। अपनी कृपा से प्रभु परमेश्वर अपने विश्वासियों को इस महामारी (दंडादेश) से बचाएगा। पवित्रशास्त्र यहां यह कहता है कि इन टिड्डियों द्वारा डंक मारने का असर इतना अधिक पीड़ादायी होगा कि तड़पते हुए मनुष्य मौत की भीख मांगेंगे, लेकिन उन्हें मांगने से भी मौत नहीं मिलेगी।

"जब छठवें स्वर्गदूत ने तुरही फूंकी, तब मैंने सोने की वेदी जो परमेश्वर के सम्मुख है उसके चार सींगों में से एक शब्द सुना। वह छठवें स्वर्गदूत से, जिसके पास तुरही थी, कह रहा था, 'उन चार स्वर्गदूतों को जो फरात महानदी के निकट बंधे हैं, खोल दे'। वे चार स्वर्गदूत जो इसी घड़ी, दिन, महीने और वर्ष के लिए रखे गए

थे, मुक्त कर दिए गए कि वे मानवजाति की एक तिहाई को मार डालें। सेना के घुड़सवारों की संख्या बीस करोड़ थी, मैंने उनकी गिनती सुनी। और मुझे दर्शन में घोड़े और उनके सवार इस प्रकार दिखाई दिए: वे सवार कवच पहिने थे, जो अग्नि, धूम्रकांत तथा गंधक के रंगों के समान थे। घोड़ों के सिर सिंहों के सिरों के सदृश थे और उनके मुंह से अग्नि, धुआं और गंधक निकलते थे। इन तीन महामारियों से, अर्थात् उन के मुख से निकलने वाली अग्नि, धुआं और गंधक से मनुष्य जाति की एक तिहाई नष्ट हो गई। उन घोड़ों की सामर्थ्य उनके मुंह और पूंछ में थी, क्योंकि इनकी पूंछे सर्पों के सदृश थीं और उनमें सिर थे। इन्हीं से वे हानि पहुंचाते थे" (प्रका0 9:13–19)। भयानक टिड्डियों द्वारा पांच महीने तक उत्पीड़ित किए जाने के बाद छठवां स्वर्गदूत तुरही फूंकेगा। इस तुरही–निनाद के पश्चात् 'फरात नदी के पास बंधे हुए चार स्वर्गदूतों' को खोल दिया जाएगा ताकि वे "मानव जाति की एक तिहाई को मार डालें"।

"फिर भी शेष मनुष्यों ने, जो इन महामारियों से न मरे थे, अपने हाथों के कामों से मन न फिराया कि वे भूत–प्रेत तथा सोने, चांदी, पीतल, पत्थर, और काठ की प्रतिमाओं की पूजा न करें, जो न तो देख सकतीं, न सुन सकती और न चल सकती हैं; न उन्होंने हत्या के कार्यों से, न जादू–टोनों से, न व्यभिचार से, और न चोरी करने से मन फिराया" (प्रका0 9:20–21)। कितनी आश्चर्यजनक बात कि मनुष्य इतना पाषाण–हृदय हो सकता है। पृथ्वी के एक तिहाई विनाश, पांच माह तक टिड्डियों द्वारा घोर उत्पीड़न और मानव जाति के एक तिहाई लोगों की मृत्यु देखने के बावजूद, शेष मनुष्य अपने पापों से न तो मन फिराये और न ही परमेश्वर से दया की भीख मांगे।

चमत्कारी पशु

6

"फिर स्वर्ग में एक बड़ा चिन्ह दिखाई दिया। एक स्त्री सूर्य पहिने थी। उसके पैरों के नीचे चन्द्रमा तथा सिर पर बारह तारों का एक मुकुट था। वह गर्भवती थी, तथा बच्चे को जन्म देने के लिए प्रसव–पीड़ा के कारण चिल्ला रही थी। एक और चिन्ह स्वर्ग में दिखाई दिया: और देखो लाल रंग का एक विशाल अजगर था। उसके सात सिर और दस सींग थे, तथा उसके सिरों पर सात मुकुट थे। उसकी पूंछ ने आकाश के तारों का एक तिहाई भाग खींचकर पृथ्वी पर फेंक दिया। वह अजगर उस स्त्री के समक्ष खड़ा हो गया जो बच्चे को जन्म देने वाली थी, कि जब बच्चे का जन्म हो तो वह उसको खा जाए। उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जो लोहे के दण्ड से सब जातियों पर शासन करेगा। उस स्त्री का वह बच्चा परमेश्वर और उसके सिंहासन के पास उठा लिया गया। तब वह स्त्री जंगल में भाग गई जहां परमेश्वर ने उसके लिए एक स्थान तैयार किया था कि एक हजार दो सौ साठ दिन तक वहां उसका पोषण किया जाय" (प्रका0 12:1–6)। यहां यूहन्ना हमें स्पष्टतः यह नहीं बताता कि इन पदों में जिस "स्त्री" का वर्णन है, वह कौन है। बहरहाल ऐसा प्रतीत होता है कि यह **स्त्री** इस्राएल का प्रतीक है। प्रभु यीशु मसीह इस्राएली जाति के द्वारा ही संसार में देहधारी हुआ। इन पदों में वर्णित "विशाल अजगर" शैतान है। अदन की वाटिका में जब परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता भेजने का वायदा किया, तब से लेकर जब तक **मसीह** संसार में आकर अपने जीवन–मरण द्वारा मानव–उद्धार का पावन–कार्य पूर्ण करके स्वर्ग में नहीं उठा लिया गया, तब तक लगातार शैतान उसके विनाश की ताक में लगा रहा। शैतान परमेश्वर का विरोधी है और जो शैतान के संसारी राज–पाट

को एक दिन समाप्त करेगा उसका (अर्थात मसीह का) भी विरोधी है। मसीह यीशु की जीवनी का अध्ययन इस बात को सुस्पष्ट कर देता है कि शैतान ने बारम्बार उसे मारने की कोशिश की ताकि वह अपने बलिदान द्वारा मानव–उद्धार के काम को पूरा न कर सके। वह यीशु का विनाश नहीं कर सका, और अब ऐसा करने का सवाल ही नहीं पैदा होता। लेकिन वह प्रभु यीशु के उन विश्वासियों को सताना व नष्ट करना चाहता है जो परमेश्वर के प्रियजन हैं और जिन्हें परमेश्वर अपने राजदूतों की भांति इस्तेमाल करता है। क्लेश–काल के दौरान इस्राएल के साथ भी शैतान यही करेगा – इस्राएल को बहुत अधिक उत्पीड़न सहना पड़ेगा। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शैतान सिर्फ उतना ही कर सकता है जितना करने की इजाजत प्रभु परमेश्वर उसे देता है। इस्राएल को सताने की उसे अनुमति मिलेगी, लेकिन इसका मकसद इस्राएलियों को प्रभु परमेश्वर की ओर उन्मुख करना (मनफिराव का मौका देना) होगा। पुराना नियम का इतिहास इसका साक्षी है कि इस्राएली लोग जब–जब परमेश्वर से दूर हुए, उसने उन्हें कष्ट व कठिनाइयों के वसीले से परमेश्वर की ओर मन फिराने का बारम्बार अवसर प्रदान किया (होशे 5:15–6:1)।

"तब मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे। उसके सींगो पर दस मुकुट थे तथा उसके सिरों पर ईश–निन्दा के नाम लिखे थे" (प्रका0 13:1)। यहां यूहन्ना ने जिस "पशु" का उल्लेख किया है वही "ख्रीष्ट–विरोधी" होगा। दूसरा थिस्सलुनीकियों की पत्री के दूसरे अध्याय के पहले पद से चौथे पद पर ध्यान दें : *"हे भाइयों, अब हम तुमसे अपने यीशु मसीह के आगमन और उसके पास अपने एकत्र होने के सम्बन्ध में निवेदन करते हैं, कि तुम किसी आत्मा, वचन या ऐसे पत्र के द्वारा जो मानो हमारी ओर से यह प्रकट करता हो कि प्रभु का दिन आ गया है, अपने मन में विचलित न होना, और न घबराना। कोई तुम्हें*

किसी भी तरह धोखा न देने पाए, क्योंकि वह दिन उस समय तक न आएगा जब तक कि पहिले धर्म का परित्याग न हो और पाप–पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रकट न हो जाए, जो तथाकथित ईश्वर या पूज्य कहलाने वाली प्रत्येक वस्तु का विरोध करता है और अपने आप को उन सब से ऊँचा ठहराता है, यहां तक कि वह परमेश्वर के मंदिर में बैठकर स्वयं को ईश्वर प्रदर्शित करता है" (दू0 थिस्स0 2:1–4)। यह "ख्रीष्ट–विरोधी" सत्ता–सामर्थ्य में इतना अधिक शक्तिशाली होगा कि अपने आपको परमेश्वर–तुल्य दर्शाने की कोशिश में (यहूदियों के) मंदिर में बैठकर लोगों से अपनी पूजा–अर्चना कराने लगेगा। परन्तु थिस्सलुनीकियों की पत्री से यह भी स्पष्ट है कि प्रभु यीशु के पुनरागमन पर शैतान की सारी योजनाएं एवं ख्रीष्ट–विरोधी की सत्ता–सामर्थ्य समाप्त की जाएगी।

"उसे एक ऐसा मुंह दिया गया जिससे कि वह अहंकारपूर्ण और ईश–निन्दक शब्द बोले, तथा उसे बयालीस महीनों तक कार्य करने का अधिकार दिया गया। उसने परमेश्वर के विरुद्ध निन्दा करने के लिए अपना मुंह खोला कि उसके नाम, उसके तम्बू अर्थात् उनके विरुद्ध जो स्वर्ग में निवास करते हैं निन्दा करे। उसे पवित्र लोगों के साथ युद्ध करने और उन पर विजय पाने का अधिकार दिया गया तथा प्रत्येक कुल, लोग, भाषा और जाति पर उसे अधिकार दिया गया। पृथ्वी के सब निवासी उसकी पूजा करेंगे, अर्थात प्रत्येक व्यक्ति जिसका नाम उस मेमने के जीवन की पुस्तक में जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात किया गया है नहीं लिखा गया है" (प्रका0 13:5–8)। पौलुस द्वारा दूसरा थिस्सलुनीकियों में लिखी सच्चाईयों की तरह यूहन्ना ने भी **प्रकाशितवाक्य** में लिखा है कि **ख्रीष्ट–विरोधी** द्वारा परमेश्वर एवं उसके अनुयायियों के बारे में तमाम निन्दाजनक बातें कही जाएंगी और वह स्वयं की मंदिर में पूजा–अर्चना करायेगा। यहां यूहन्ना यह भी लिखता है कि ख्रीष्ट–विरोधी को "बयालीस महीनों"

तक अपना काम करने का अधिकार प्राप्त होगा – अर्थात् सात वर्षीय क्लेश–काल के आधे समय (साढ़े तीन वर्ष) तक। यह सत्ता–अधिकार शैतान से मिलना सम्भव है; लेकिन स्मरण रहे कि शैतान अपनी मनमानी करने के लिए आजाद नहीं है। वह जो कुछ करता है वह सब सर्वसत्ताधारी प्रभु परमेश्वर की सर्वोपरि इच्छा के अधीन एवं उसकी योजना के अनुसार ही कर सकता है। यूहन्ना के अनुसार "ख्रीष्ट–विरोधी" को तमाम मसीहियों से लड़ने एवं उनकी हत्या करने की भी अनुमति होगी। हो सकता है कि "ख्रीष्ट–विरोधी" को मसीहियों को मारने की अनुमति प्रदान करना ईश्वरीय क्रूरता प्रतीत हो; किन्तु अन्ततः उसके मारने पर विश्वासी लोग महाक्लेश से छुटकारा पाकर अनन्त जीवन एवं स्वर्गिक शांति में जाएंगे। यूहन्ना यह भी कहता है कि जिनके नाम जीवन की पुस्तक में दर्ज नहीं हैं वे लोग "ख्रीष्ट–विरोधी" द्वारा धोखा खाकर उसकी ही पूजा–अर्चना करेंगे। इसके विपरीत सच्चे विश्वासी लोग धोखा नहीं खाएंगे, मगर सताए जायेंगे।

"फिर मैंने पृथ्वी में से एक और पशु को निकलते देखा। मेमने के से उसके सींग थे, और वह अजगर के समान बोलता था। उस पहिले पशु की उपस्थिति में वह उसके सब अधिकार काम में लाता था। वह पृथ्वी और उसके निवासियों से उस पहिले पशु की जिसका घातक घाव अच्छा हो गया था, पूजा करवाता था। वह बड़े–बड़े चमत्कार दिखाता था। यहां तक कि लोगों के समक्ष स्वर्ग से पृथ्वी पर अग्नि बरसा देता था। इन चमत्कारों के द्वारा जिन्हें उस पशु के समक्ष दिखाने की शक्ति उसे प्राप्त थी, वह पृथ्वी के निवासियों को धोखा देता और उनसे कहता था कि उस पशु की मूर्ति स्थापित करो, जिस पर तलवार का घाव लगा था, और जो पुनः जीवित हो गया था। उसे पशु की मूर्ति में प्राण डालने का अधिकार दिया गया, जिससे पशु की वह मूर्ति बोलने लगे और जितने उस पशु की मूर्ति

की पूजा न करें, उन्हें मरवा डाले। उसने छोटे–बड़े, धनी–निर्धन, स्वतंत्र और दास – सबके दाहिने हाथ या माथे पर छाप लगवा दी। और उसने यह प्रबन्ध किया कि जिसके पास उस पशु का नाम या उसके नाम की संख्या की छाप हो, उसको छोड़ और कोई व्यक्ति लेन–देन न कर सके। बुद्धिमानी इसी में है: जिसे समझ हो वह उस पशु की संख्या का हिसाब लगा ले, क्योंकि यह संख्या किसी मनुष्य की है, और उसकी संख्या छः सौ छियासठ है" (प्रका0 13:11–18)। यहां यूहन्ना जिस दूसरे "पशु" का उल्लेख करता है उसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में आगे चलकर "झूठा नबी" या झूठा भविष्यवक्ता भी कहा गया है। इस शख्स के पास बहुत से चमत्कार दिखाने का अधिकार होगा ताकि इसके धोखे में फंस कर बहुत से लोग "ख्रीष्ट–विरोधी" की पूजा करने लगें। "ख्रीष्ट–विरोधी" के अनुयायियों के दाहिने हाथ या फिर माथे पर छः सौ छियासठ की संख्या की छाप लगी होगी और जिन पर यह छाप लगी होगी, सिर्फ वह लोग "लेन–देन" कर सकेंगे, अन्य कोई नहीं। जो लोग ख्रीष्ट–विरोधी की छाप ग्रहण नहीं करेंगे और उसकी पूजा नहीं करेंगे, उन्हें झूठा नबी मार डालेगा। "ख्रीष्ट विरोधी" और "झूठा नबी" इन दोनों को अपनी नैसर्गिक शक्ति शैतान से ही मिलेगी। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वे उतना ही कर सकेंगे जितना हमारा परम प्रधान परमेश्वर उन्हें करने देगा। जब अविश्वासी लोग परमेश्वर को अस्वीकार करने के कारण दुख–दर्द एवं कठिनाइयों में होंगे, तब प्रभु के विश्वासीगण सर्वशक्तिमान परमेश्वर तथा अनुग्रहकारी उद्धारकर्ता प्रभु यीशु की उपस्थिति का आनन्द पाएंगे – अर्थात् ईश्वरीय उपस्थिति में प्राप्त अनुग्रह, दया, प्रेम एवं उसकी महिमा का अतुलनीय आनन्द।

अंतिम विपत्तियां 7

"फिर मैंने स्वर्ग में एक और महान् और अद्‌भुत चिन्ह देखा। सात स्वर्गदूत थे जिनके पास सात अंतिम विपत्तियां थीं, क्योंकि इनके समाप्त हो जाने पर परमेश्वर का प्रकोप पूर्ण हो जाता है" (प्रका0 15:1)। इसके बाद प्रेरित यूहन्ना ने "स्वर्ग में एक और महान् और अद्‌भुत चिन्ह देखा" – सात अंतिम विपत्तियां। इन महामारियों के समाप्त हो जाने के बाद प्रभु यीशु संसार का न्याय करने तथा इस धरती पर अपना शासन शुरू करने वापस आएगा (दू0 थिस्स0 1:7–10)। इन अंतिम दंडादेशों या महामारियों के समय मसीह की कलीसिया उसके साथ स्वर्ग में होगी। इन दंडादेशों के पूर्ण होने के पश्चात् प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर वापस आएगा और उसके साथ उसके विश्वासियों की मंडली अर्थात् कलीसिया भी आएगी।

"और मैंने मानो अग्नि–मिश्रित कांच का एक समुद्र देखा; और उनको भी जो उस पशु, उसकी मूर्ति तथा उसके नाम के अंक पर विजयी हुए थे, परमेश्वर की वीणाएं लिए हुए, उस कांच के समुद्र पर खड़े देखा" (प्रका0 15 :2)। यहां क्लेशकाल के दौरान प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास द्वारा उद्धार पाने वालों का जिक्र पाया जाता है। इन नये विश्वासियों ने ख्रीष्ट–विरोधी की छाप एवं उसकी पूजा–अर्चना को अस्वीकार किया था और उनके विश्वास के कारण क्लेशकाल में उनकी हत्या कर दी गयी थी। क्लेशकाल के दौरान मसीह के विश्वासियों की हत्या करके ख्रीष्ट–विरोधी एवं उसके चेले

संभवतः यह सोच कर बहुत खुश होंगे कि उन्होंने बड़ी फतह पायी है। परन्तु जरा इन मसीही शहीदों के बारे में यूहन्ना के शब्दों पर ध्यान दें कि उसने इन्हें "उस पशु... पर विजयी" कहा है। बेशक इस धरती पर क्लेश काल के समय उनकी जीवन–दशा सबसे अधिक दुख भरी होगी; लेकिन प्रभु यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानने के द्वारा वे सबसे महत्वपूर्ण विजय प्राप्त कर लेंगे और अन्ततः समस्त पाप, दुख, बीमारी और उत्पीड़न से सदा–काल के लिए छुटकारा पा जाएंगे। उसके देहधारी रूप में जब यीशु मसीह को गिरफ्तार करके सलीब पर मार डाला गया, तब भी शैतान और उसके शागिर्दों ने यही सोचा कि वही विजयी हुए हैं। यह सच्चाई उनकी समझ से परे की बात थी कि मसीह अपनी मृत्यु के द्वारा ही पाप का दंड–मूल्य देकर एकमात्र सच्चा विमोचक, उद्धारक व मुक्तिदाता होगा।

"वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेमने का गीत यह कहते हुए गा रहे थेः "हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे काम महान् और अद्‌भुत हैं। हे जाति–जाति के राजा, तेरे मार्ग धर्म–संगत और सच्चे हैं। हे प्रभु, कौन तेरा भय न मानेगा, और तेरे नाम की महिमा न करेगा? क्योंकि तू ही पवित्र है। सब जातियां आकर तेरी उपासना करेंगी, क्योंकि तेरे न्याय के कार्य प्रकट हो गए हैं" (प्रका0 15:3–4)। ख्रीष्ट–विरोधी एवं उसके अनुयायियों द्वारा कत्ल किए गये ये विश्वासी परमेश्वर की स्तुति–प्रशंसा गाते हुए उसकी आराधना कर रहे थे। वे दो गीत गा रहे थे। पहला गीत **मूसा का गीत** कहलाता है। संभव है कि मूसा ने लाल समुद्र पार करने के बाद यह गीत गाया हो (निर्ग0 15: 1–4)। दूसरा गीत **मेमने का गीत** कहा गया है। यह गीत

संभवतः वही गीत हो सकता है जिसका प्रकाशितवाक्य के पांचवे अध्याय के नौवें पद से चौदहवें पद तक उल्लेख है।

इसके बाद प्रकाशितवाक्य के सोलहवें अध्याय पर ध्यान दें जहां मसीह की वापसी से पूर्व परमेश्वर द्वारा इस धरती पर भेजी गयी शेष विपत्तियों (दंडादेशों) का वर्णन है: *"मैंने मंदिर में एक ऊँची आवाज़ को सात स्वर्गदूतों से यह कहते सुना, 'जाओ और परमेश्वर के प्रकोप के सातों कटोरों को पृथ्वी पर उडेल दो'। अतः पहिले स्वर्गदूत ने जाकर अपना कटोरा पृथ्वी पर उडेल दिया। इससे उन मनुष्यों पर जिन पर पशु की छाप थी और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे, बुरे और कष्टदायक फोड़े निकल आए। दूसरे स्वर्गदूत ने जब अपना कटोरा समुद्र में उडेल दिया, तो समुद्र मरे हुए मनुष्य के लहू के समान हो गया और उसमें का प्रत्येक जल–जन्तु मर गया। तीसरे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा नदियों और जल–स्रोतों पर उडेला, और वे लहू बन गए। तब मैंने जल के स्वर्गदूत को यह कहते सुना, 'हे पवित्र, तू जो है और जो था, तू न्यायी है; क्योंकि तू ने इन बातों का न्याय किया है; क्योंकि मनुष्यों ने पवित्र लोगों और नबियों का लहू बहाया था, पर तू ने उन्हें पीने के लिए लहू दिया है। वे इसी योग्य हैं'। फिर मैंने वेदी में से यह शब्द सुना, 'हां, हे प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, तेरे न्याय सत्य और उचित हैं'। चौथे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा सूर्य पर उंडेला और मनुष्यों को अग्नि से झुलसाने का उसे अधिकार दिया गया और मनुष्य भयंकर ताप से झुलस गए। तब उन्होंने परमेश्वर के नाम की निन्दा की जिसको इन विपत्तियों पर अधिकार है, परन्तु मन न फिराया कि उसे महिमा दें। पांचवे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा पशु के सिंहासन पर उंडेला और उसके राज्य पर अंधेरा छा गया। पीड़ा के मारे लोगों की जीभ ऐंठने लगीं। और वे अपनी पीड़ा और फोड़ों के कारण स्वर्ग के परमेश्वर की*

निन्दा करने लगे, फिर भी उन्होंने अपने अपने कामों से पश्चाताप न किया। छठवें स्वर्गदूत ने अपना कटोरा महानदी फरात पर उंडेल दिया। इस से उसका जल सूख गया कि पूर्व दिशा के राजाओं के लिए मार्ग तैयार हो जाए। फिर मैंने उस अजगर के मुंह, उस पशु के मुंह, और उस झूठे नबी के मुंह से तीन अशुद्ध आत्माओं को मेंढकों के रूप में निकलते देखा। ये चिन्ह दिखाने वाली दुष्टात्माएं हैं, जो जाकर समस्त संसार के राजाओं को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस महान् दिन के युद्ध के लिए एकत्र करती हैं– देखो, मैं चोर के समान आता हूं, धन्य है वह जो जागृत रहकर अपने वस्त्रों की रक्षा करता है कि नंगा न फिरे और लोग उसकी नग्नता को न देखें – और उन्होंने उनको उस स्थान में एकत्र किया जो इब्रानी भाषा में हर–मगिदोन कहलाता है। सातवें, स्वर्गदूत ने अपना कटोरा वायु पर उंडेल दिया, और मंदिर के सिंहासन से एक बड़ा शब्द हुआ, 'हो चुका।' तब बिजली चमकी, आवाज़ और गर्जन हुआ, तथा एक ऐसा बड़ा भूकम्प आया जैसा पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर अब तक कभी न आया था – वह भूकम्प इतना बड़ा और शक्तिशाली था। इससे महानगरी के तीन टुकड़े हो गए, और राज्य–राज्य के नगर धाराशायी हो गए। तब परमेश्वर ने महानगरी बाबुल का स्मरण किया कि अपने भयंकर प्रकोप की मदिरा उसे पिलाए। सब द्वीप टल गए तथा पर्वतों का पता तक न चला। मन–मन भर वज़न के ओले आकाश से मनुष्यो पर पड़ने लगे। तब ओले पड़ने की इस विपत्ति के कारण लोगों ने परमेश्वर की निन्दा की, क्योंकि यह विपत्ति अत्यन्त कठोर थी" (प्रका0 16:1–21) कितनी विस्मयकारी बात कि परमेश्वर से कृपा–दृष्टि की भीख मांगने के बजाय यहां फिर पत्थर–दिल इंसान पिता परमेश्वर की निन्दा करते दिखते हैं। शारीरिकतापूर्ण तथा पाषाण हृदय से परिपूर्ण अविश्वासियों की यही कहानी है। ऐसे लोग परमेश्वर

को अन्यायी व पक्षपाती मानते हैं और स्वयं को उसके (न्याय से परे और) न्याय–दंड का पात्र नहीं समझते।

"फिर मैंने मानो एक विशाल जनसमूह की आवाज़ तथा समुद्र की लहरों और बादल के घोर गर्जन को यह कहते हुए सुना, 'हल्लिलूय्याह! क्योंकि प्रभु हमारा सर्वशक्तिमान परमेश्वर राज्य करता है। आओ, हम आनन्दित और हर्षित हों और उस की स्तुति करें, क्योंकि मेमने का विवाह आ पहुंचा है और उस की दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है'" (प्रका0 19:6–7)। प्रेरित यूहन्ना को प्राप्त ईश्वरीय दर्शन में यह विशाल जनसमूह परमेश्वर की स्तुति–उपासना इसलिए कर रहा है, क्योंकि बहुप्रतीक्षित समय आ गया है जिसकी सब बाट जोह रहे थे – अर्थात् "ख्रीष्ट–विरोधी", झूठे नबी तथा इनके अनुयायियों को न्याय–दंड देने तथा अपना शासन स्थापित करने के लिए इस धरती पर मसीह की वापसी का समय। प्रभु की आराधना और स्तुति का यह एक अत्यन्त अद्‌भुत समय होगा। मेमने के विवाह की तैयारी में सब लोग प्रभु परमेश्वर की स्तुति–आराधना करेंगे।

"हे पतियों, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम करो। जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम किया और अपने आप को उसके लिए दे दिया कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी महिमायुक्त कलीसिया बनाकर प्रस्तुत करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न इनके समान कुछ हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो" (इफि0 5:25–27)। मसीह यीशु ही **मेमना** है, (और हम विश्वासीगण) अर्थात् कलीसिया उसकी दुल्हिन है। यह वह स्वर्गिक समय होगा जबकि प्रभु यीशु मसीह अपनी दुल्हिन

को पवित्र एवं निर्दोष रूप में प्रस्तुत करेगा – मसीह में उसकी स्थापना व स्थिरता के कारण पवित्र एवं निर्दोष।

"उसे चमकदार, स्वच्छ और महीन मलमल पहिनने को दिया गया है– यह मलमल तो संतों के धार्मिकता के कार्य हैं" (प्रका0 19:8)। इस प्रकार मसीह की दुल्हिन चमकदार, स्वच्छ और महीन मलमल में सुसज्जित है जो कि मसीह की धार्मिकता का प्रतीक है। सिर्फ मसीह की धार्मिकता ही हमें परमेश्वर के समक्ष पूर्णरूपेण ग्रहणयोग्य बनाती है। पहला कुरिन्थियों की पत्री के पहले अध्याय के तीसवें पद में पौलुस यह लिखता है कि मसीह यीशु ही हमारी **धार्मिकता** है। जैसे–जैसे पवित्र आत्मा हमारे जीवन में मसीह के जीवन को पुनरुत्पादित, विकसित या निर्मित करता जाता है वैसे–वैसे हम मसीह की धार्मिकता से सुसज्जित व विभूषित होते (पहिनते या धारण करते) जाते हैं (रोमि0 13:14)। यह भी परमेश्वर के अनुग्रह मात्र से सम्भव है। हमारे वास्ते प्रभु यीशु ने जो कुछ किया है सिर्फ उसी के वसीले से हम "स्वच्छ मलमल" धारण करके परमेश्वर के समक्ष ग्रहणयोग्य होते हैं।

विश्वसनीय और सत्य

8

हमने अब तक प्रभु की कलीसिया के उठा लिए जाने के बाद, महाक्लेश के समय घटित होने वाली घटनाओं के बारे में विचार किया। आइए अब महाक्लेश के बाद की घटनाओं पर विचार करे, जब प्रभु यीशु सब जातियों (राष्ट्रों) का न्याय करने आएगा। *"फिर मैंने आकाश को खुला देखा, और देखो, एक श्वेत घोड़ा है, और उसका सवार विश्वासयोग्य और सत्य कहलाता है। वह धार्मिकता से न्याय और युद्ध करता है। उसके नेत्र आग की ज्वाला हैं। उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। और उसका एक नाम उस पर लिखा हुआ है जिसे उसके अतिरिक्त और कोई नहीं जानता। वह लहू में डुबोया हुआ वस्त्र पहिने है, और उसका नाम 'परमेश्वर का वचन' है"* (प्रका0 19:11–13)। क्लेशकाल के बाद जब प्रभु यीशु न्यायकर्ता के रूप में वापस आएगा तो इसी प्रकार आएगा। उसका यह (न्यायकर्ता के रूप में) आगमन उसके प्रथम (देहधारी उद्धारकर्ता रूपी) आगमन से भिन्न होगा। अपने प्रथम आगमन में वह सबके **सेवक** के रूप में तथा पाप के दण्ड–मूल्य के रूप में अपना जीवन देने आया (यूह0 3:16–17)। एक गरीब की मंगेतर, कुंवारी मरियम को उसकी माता होने के लिए चुना गया और वह एक चरनी में पैदा हुआ। लेकिन अपने पुनः आगमन के समय, वह सर्वसामर्थी परमेश्वर–पुत्र, संसार के उन सभी लोगों का न्यायकर्ता होकर आएगा जिन्होंने पश्चाताप करने और उसे उद्धारकर्ता मानकर उस पर विश्वास करने से इन्कार किया। प्रकाशितवाक्य के इस परिच्छेद में यीशु को "विश्वासयोग्य और सत्य"

कहा गया है। क्यों? क्योंकि उसने इस पृथ्वी पर आकर **अपने पिता** की इच्छा को पूर्णरूपेण पूरा किया। पिता परमेश्वर द्वारा सौंपे गये किसी भी दायित्व को उसने अपूर्ण नहीं छोड़ा। यूहन्ना यह भी लिखता है कि "**वह धार्मिकता से न्याय और युद्ध करता है**"। केवल उसी ने हमें बचाने के लिए, देहधारी होकर दीनता की दशा में, इस धरती पर आने की पहल की। परन्तु अब वह उन सबका न्याय करने आने वाला है जो उसे अपना उद्धारकर्ता मानने से इनकार करते हैं। हां, एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि उसका न्याय सच्चा, उचित एवं धार्मिकतापूर्ण होगा। यूहन्ना यह भी कहता है कि "उसके नेत्र आग की ज्वाला" हैं। यह इस सच्चाई की ओर इंगित करता है कि प्रभु यीशु सर्वज्ञानी जज है, अतः उसका न्याय उचित एवं सच्चा होगा।

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है कि "उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं"। ख्रीष्ट–विरोधी के बारे में यूहन्ना ने यह लिखा कि उसके सिर पर "दस मुकुट" थे (प्रका0 13:1)। परन्तु यीशु के विषय में यह लिखा है कि उसके सिर पर अनगिनत मुकुट होंगे। यह इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि जब वह न्यायकर्ता के रूप में तथा इस धरती के शासक के रूप में वापिस आएगा तो उसका शासन सम्पूर्ण शासन होगा अर्थात् संसार के सभी राष्ट्र उसके अधीन होंगे।

प्रभु यीशु के बारे में यूहन्ना यह भी लिखता है कि "उसका एक नाम उस पर लिखा हुआ है जिसे उसके अतिरिक्त और कोई नहीं जानता"। पवित्रशास्त्र बाइबॅल में प्रभु यीशु के अनेक नाम पाए जाते हैं। प्रत्येक नाम उसके स्वभाव के किसी न किसी गुण या विशिष्टता को दर्शाता है। जब पवित्रशास्त्र यह कहता है कि "उसका

एक ऐसा नाम भी है जिसे उसके सिवाय अन्य कोई नहीं जानता," तो इसका भावार्थ यह है कि उसकी महानता अथाह है और मानवीय दृष्टि से हम उसकी असीम **महानता** को पूर्णतः कभी नहीं समझ सकते। वह असीम, प्रतापी प्रभु है। बहरहाल, यूहन्ना ने उसके एक सुपरिचित नाम का स्पष्ट उल्लेख किया है:"**परमेश्वर का वचन**"। पवित्र बाइबॅल परमेश्वर का **लिपिबद्ध वचन** है, और यीशु मसीह (परमेश्वर का) **जीवित** वचन है (यूह0 1:1,14)। पवित्र बाइबॅल में परमेश्वर के बारे में जितनी भी सच्चाईयां सिखायी गई हैं, उन सब बातों को मसीह यीशु ने अपने देहधारी जीवन–आचरण द्वारा पूर्णरूपेण प्रकट व प्रदर्शित किया। वह तो "अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप" है (कुलु0 1:15, इब्रा0 1:3)।

"स्वर्ग की सेनाएं श्वेत, स्वच्छ और महीन मलमल पहिने, श्वेत घोड़ों पर उसके पीछे पीछे चलती हैं। उसके मुख से एक चोखी तलवार निकलती है कि वह उस से जाति–जाति का संहार करे। वह लौह–दंड से शासन करेगा, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की मदिरा का रसकुंड रौंदेगा" (प्रका0 19:14–15)। जब संसार के न्यायकर्ता के रूप में मसीह वापस आएगा तो अकेला नहीं होगा। "स्वर्ग की सेनाएं" उसके साथ होंगी। संभवतः इसका तात्पर्य स्वर्गदूतों के असंख्य समूह तथा प्रभु की कलीसिया से है। "उसके मुख से चोखी तलवार" निकलने का भावार्थ उसकी वाणी से है (भज0 29:3–4)। हमें यह नहीं भूलना है कि प्रभु यीशु, परमेश्वर है और (परमेश्वर) सर्वसामर्थी है। परमेश्वर ने अपने वचन या वाणी मात्र से सारी सृष्टि को रचा। वह अपनी शक्तिशाली वाणी के प्रहार से ही सबका न्याय करेगा। इसके बाद यह भी लिखा है कि "वह लौह–दंड

से शासन करेगा"। कहने का मतलब यह है कि संसार के सारे राष्ट्रों पर उसका पूर्णरूपेण शासनाधिकार होगा। सारे राष्ट्र उसके आधिपत्य की अधीनता में होंगे। *"उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है: 'राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'"* (प्रका0 19:16)। इस प्रकार समष्टि के ऊपर उसकी अधिकार–सत्ता होगी। वही परम प्रधान शासक होगा। उससे महान अन्य कोई भी नहीं।

"फिर मैंने पशु और पृथ्वी के राजाओं और उनकी सेनाओं को एकत्रित होते देखा कि उस घोड़े के सवार और उसकी सेना से युद्ध करें" (प्रका0 19 :19)। इस स्वर्गिक सेना के प्रति ख्रीष्ट–विरोधी की प्रतिक्रिया पर ध्यान दें। वह इस संसार के सारे नेताओं और उनकी सेनाओं को मसीह तथा उसकी स्वर्गिक सेना के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एकत्रित करेगा। यहां एक बार फिर, पाप के असाध्य रोग (से ग्रसित मानव) का पागलपन दिखायी देता है। अर्थात् परमेश्वर से बारम्बार पराजय के बाद उसकी अधीनता स्वीकारने के बजाए उससे लड़ते रहने की सनक।

"वह पशु पकड़ा गया, और उसके साथ वह झूठा नबी भी जो उसकी उपस्थिति में चमत्कार दिखा कर उनको छलता था जिन पर पशु की छाप थी तथा जो उसकी प्रतिमा की पूजा करते थे। ये दोनों उस गन्धक से धधकती आग की झील में जीवित डाल दिए गए। बाकी सब उस घुड़सवार के मुख से निकलती तलवार से मारे गए और सब पक्षी उनका मांस खाकर तृप्त हुए" (प्रका0 19:20–21)। बहुत से मसीही लोग शैतान को एक ऐसा शत्रु सोचते हैं जिस पर विजयी होना बेहद मुश्किल या असम्भव है। लेकिन इन बाइबॅल पदों

में परमेश्वर की सामर्थ्य की तुलना में शैतान के ताकत की सही माप पायी जाती है। ध्यान दें। शैतान सबको इकट्ठा करके बड़े जोर–शोर से युद्ध की तैयारी तो करता है, लेकिन सर्वशक्तिमान प्रभु का सामना (अर्थात् उससे युद्ध) करने का किसको साहस! युद्ध करने की नौबत भी नहीं आई – प्रभु यीशु के आते ही **ख्रीष्ट–विरोधी** और **झूठा नबी** फौरन पकड़ लिए गये और "धधकती आग की झील में जीवित डाल दिए गए"। शेष सभी अविश्वासी लोग प्रभु के "मुख से निकलती तलवार" (अर्थात् उसके वचन) से मार डाले गये। जब परमेश्वर की इच्छा–योजना के पूर्ण होने का समय आ जाता है, तब उसकी योजना अवश्य पूरी होती है। शैतान वर्तमान काल में एक सामर्थी शत्रु समान भले दिखाई दे; लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि अभी "उस आग की धधकती झील" में उसे डाले जाने का समय नहीं आया है। निःसंदेह प्रभु यीशु एक दिन सच्चे न्यायकर्ता के रूप में वापिस आने वाला है। परन्तु न्याय से पूर्व अभी उसका अनुग्रह उपलब्ध है। जो उसके अनुग्रहरूपी दान का तिरस्कार करते हैं, वे स्वयं को दोषी ठहराते हुए, उसके दंडादेश को दावत देते हैं।

सहस्राब्द और अंतिम न्याय

9

"तब मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह–कुंड की कुंजी और एक बड़ी जंजीर थी। उसने उस अजगर, उस पुराने सांप को, जो इबलीस और शैतान है, पकड़ा और हजार वर्ष के लिए बांध दिया, और उसे अथाह–कुंड में डालकर बन्द कर दिया तथा उस पर मुहर लगा दी कि जब तक हजार वर्ष पूरे न हो जाएं, वह जातियों को धोखा न दे। इन बातों के पश्चात् उसे थोड़े समय के लिए छोड़ा जाना आवश्यक है" (प्रका0 20:1–3)। परमेश्वर के वचन के कितने सुखद शब्द ! अदन की वाटिका से लेकर वर्तमान समय तक शैतान तमाम राष्ट्रों (जातियों) को लगातार धोखा देता रहा है। प्रभु यीशु के न्यायी एवं शासक के रूप में वापस आने पर "ख्रीष्ट–विरोधी" और "झूठा नबी" आग की झील में डाल दिए जायेंगे तथा इनके समस्त अनुयायी प्रभु यीशु के शब्द–वाणों द्वारा नष्ट होंगे। तत्पश्चात् शैतान को उसी "अथाह–कुंड" में डाल दिया जाएगा जिसमें से निकलने वाली भयानक टिड्डियों ने 'उन मनुष्यों को हानि पहुंचायी थी जिनके माथे पर परमेश्वर की मुहर नहीं थी' (प्रका0 9:3)। ध्यान दें कि शैतान को बांधकर "अथाह–कुंड" में डालने वाला व्यक्ति परमेश्वर का दूत है। इससे सुस्पष्ट है कि शैतान की शक्ति किसी भी मायने में परमेश्वर की शक्ति के बराबर नहीं है। केवल एक ही ईश्वरीय दूत द्वारा वह पराजित किया जाएगा, और ऐसा प्रतीत होता है कि उससे शैतान ने संघर्ष की कोशिश भी नहीं की।

"तब मैंने सिंहासन देखे, और लोग उन पर बैठ गए और उन्हें न्याय करने का अधिकार दिया गया। मैंने उन लोगों की

आत्माओं को देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे, और जिन्होंने न पशु न उसकी मूर्ति की पूजा की थी, न अपने मस्तकों और हाथों पर उसकी छाप लगवाई थी; वे जीवित होकर मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करते रहे। वे मृतक जो बाकी रह गए थे हजार वर्ष पूर्ण होने तक जीवित न हुए। यह प्रथम पुनरुत्थान है। धन्य और पवित्र वे हैं जो प्रथम पुनरुत्थान के भागी हैं: इन पर दूसरी मृत्यु का कोई अधिकार नहीं, परन्तु वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उसके साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे" (प्रका0 20:4–6)। यहां यूहन्ना ने अपने दर्शन में जिन **सिंहासनों** को देखा उन **सिंहासनों** पर विश्वासी लोग बैठेंगे। उन दिनों जबकि शैतान एक हजार वर्ष तक अथाह–कुंड में बन्द रहेगा, विश्वासी लोग मसीह के साथ न्याय एवं शासन करेंगे। यद्यपि यह सुस्पष्ट नहीं है कि विश्वासी लोग कौन सा न्याय व शासन करेंगे, लेकिन इतना जरूर स्पष्ट है कि प्रभु के लोग उसके साथ शासन करने का सुअवसर पायेंगे। संभवतः यह सभी विश्वासियों के लिए होगाः पुराना नियम काल के विश्वासीगण, कलीसियाई काल के विश्वासीगण तथा क्लेशकाल के दौरान उद्धार पाए विश्वासीगण। लेकिन सब मृतक अविश्वासी, उन एक हजार वर्षों के दौरान, अपने अंतिम न्याय–दंड की प्रतीक्षा में, अधोलोक में ही रहेंगे। उस एक हजार वर्षीय शासन के पूरा होने पर मृतक अविश्वासी भी पुनः जिलाए जाएंगे ताकि उनका न्याय–दंड हो। न्याय–दंड हेतु अविश्वासियों के इस पुनः जिलाए जाने को ही द्वितीय पुनरुत्थान कहा जाता है। विश्वासियों का पुनः जीवित किया जाना प्रथम पुनरुत्थान कहलाता है। जो प्रथम पुनरुत्थान के भागी हैं उन्हें अत्यन्त **धन्य** कहा गया है,

क्योंकि वे द्वितीय मृत्यु (परमेश्वर की उपस्थिति से अनन्तकालीन अलगाव) के भागीदार नहीं होंगे। प्रभु का विश्वासीजन दो प्रकार के "जन्म" का अनुभव करता है – शारीरिक जन्म और आत्मिक जन्म, किन्तु सिर्फ एक ही प्रकार की मृत्यु का अनुभव करता है – शारीरिक मृत्यु। इसके विपरीत अविश्वासी लोग सिर्फ एक ही प्रकार के जन्म का अनुभव करते हैं – शारीरिक, किन्तु दो प्रकार की मृत्यु का – शारीरिक एवं आत्मिक।

"हजार वर्ष पूर्ण होने पर शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। वह पृथ्वी के चारों कोनों की जातियों को अर्थात् गोग और मागोग को भरमाने और उनको एकत्रित करके युद्ध करने निकलेगा। उनकी गिनती समुद्र की बालू के सदृश होगी" (प्रका0 20:7–8)। ध्यान दें कि शैतान जैसे ही अथाह–कुंड से छूटता है, फौरन पृथ्वी के राष्ट्रों (जातियों) को पुनः धोखा देने में लग जाता है। शैतान को "थोड़े समय के लिए" छोड़े जाने से दो बातें और अधिक स्पष्ट हो जाती हैं: (1) शैतान, असाध्य बुराई (दुष्टता) से भरपूर है तथा (2) जब तक कोई इंसान "नया जन्म" नहीं पाता, वह धोखा खाता रहेगा।

"उन्होंने सम्पूर्ण पृथ्वी पर निकल कर पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगरी को घेर लिया। तब स्वर्ग से आग ने गिरकर उन्हें भस्म कर दिया" (प्रका0 20:9)। मसीह के एक हजार वर्षीय राज्य के दौरान इस्राएली लोग मन फिरा कर परमेश्वर की ओर आयेंगे, मसीह को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण करेंगे और एक बार फिर शेष संसार के समक्ष परमेश्वर उन्हें अपनी साक्षी बनाएगा। चूंकि इस्राएल पुनः परमेश्वर की प्रजा होगा, अतएव शैतान के तीरों का निशाना भी।

शैतान अन्य जातियों को भरमाते हुए उनके द्वारा इस्राएल की घेराबन्दी करके यरूशलेम को नष्ट–भ्रष्ट करना चाहेगा। परन्तु उसके ऐसे दुस्साहस का नतीजा पहले जैसा ही होगा – लड़ाई से पूर्व शैतान के पिछलग्गू लोग स्वर्गिक आग द्वारा भस्म कर दिए जायेंगे। *"उनको भरमाने वाला शैतान उस अग्नि और गंधक की झील में डाल दिया गया, जहां वह पशु और झूठा नबी भी डाले गये थे। वे अनन्तकाल तक दिन–रात पीड़ा में तड़पते रहेंगे"* (प्रका0 20:10)। शैतान पर प्रभु परमेश्वर का यही अंतिम दंडादेश होगा। "अग्नि और गंधक की झील" में डाल दिए जाने पर वह फिर कभी लोगों को धोखा देने के धन्धे में नहीं लग सकेगा। वह दिन–रात सदा–सर्वदा तक उसी यातना में कराहता रहेगा।

"फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसे देखा जो उस पर बैठा था। उसकी उपस्थिति से आकाश और पृथ्वी भाग गये और उन्हें कोई स्थान न मिला" (प्रका0 20:11)। यह अविश्वासियों के न्याय–दंड का समय होगा। स्मरण रहे कि पाप के कारण यह धरती श्रापित हो चुकी है, इसलिए **महान श्वेत सिंहासन** से न्याय–दंड पूरा किए जाने के बाद वर्तमान आकाश और पृथ्वी नष्ट कर दिए जायेंगे। तत्पश्चात परमेश्वर अपने लिए तथा अपनी प्रजा के लिए नये पृथ्वी और आकाश की सृष्टि करेगा।

"तब मैंने छोटे–बड़े सब मृतकों को सिंहासन के समक्ष खड़े हुए देखा और पुस्तकें खोली गईं, तथा एक और पुस्तक खोली गई जो जीवन की पुस्तक है, और उन पुस्तकों में लिखी हुई बातों के आधार पर सब मृतकों का न्याय उनके कामों के अनुसार किया गया।

समुद्र ने उन मृतकों को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने अपने मृतक दे दिए। उनमें से प्रत्येक का न्याय उसके कामों के अनुसार किया गया। मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है। जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में फेंक दिया गया" (प्रका0 20:12–15)। शैतान के आग की झील में डाल दिए जाने तथा वर्तमान पृथ्वी और आकाश के मिटाए जाने के बाद सारे मृतक अविश्वासियों को जिलाया जाएगा ताकि उनको अंतिम न्याय–दंड मिले। यूहन्ना लिखता है कि इस श्वेत सिंहासन से न्याय करते समय "पुस्तकें" खोली गईं (संभवतः पवित्रशास्त्र की छयाछठ पुस्तकें)। इनके अतिरिक्त "जीवन की पुस्तक" भी खोली गई जिसमें सभी विश्वासियों के नाम दर्ज होंगे। ध्यान दें कि अविश्वासियों का न्याय "उन (छयाछठ बाइबॅलीय) **पुस्तकों** में लिखी हुयी बातों के आधार पर किया गया," और "उनके कामों" के आधार पर। उस श्वेत सिंहासन के समक्ष अविश्वासी लोग अपने कामों के अनुसार न्याय पाएंगे ताकि वे भलीभांति समझ जाएं कि वे ईश्वरीय न्याय–दंड के पात्र हैं। अन्ततः मुक्तिदाता पर अविश्वास के कारण वे सब आग की झील में डाले जायेंगे, इसीलिए उनके नाम "जीवन की पुस्तक" में दर्ज नहीं होंगे। इसमें कोई संदेह नहीं कि जब उस महान श्वेत सिंहासन के समक्ष (छयाछठ बाइबलीय पुस्तकों के प्रकाश में) मानव जाति के लिए परमेश्वर की इच्छा और अविश्वासियों के कामों की तुलना की जाएगी तब वहां उपस्थित प्रत्येक मनुष्य निरुत्तर एवं दोषी ठहरेगा (रोमि0 3:18)।

नया आकाश और नई पृथ्वी

10

"आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की" (उत्प0 1:1)। इस पाठ में प्रकाशितवाक्य के अंतिम दो अध्यायों पर संक्षिप्त विचार प्रस्तुत किया गया है। बाइबॅल के अनुसार प्रारम्भ में परमेश्वर ने पृथ्वी को तैयार किया, तत्पश्चात् आदम–हव्वा को रचा। आदम को निर्देश दिया गया कि वह सब चीजों की देखभाल करते हुए अपने नियंत्रण में रखे। *"और परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में सृजा। अपने ही स्वरूप में परमेश्वर ने उसको सृजा। उसने नर और नारी करके उनकी सृष्टि की। परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी, और उनसे कहा, 'फूलो–फलो और पृथ्वी में भर जाओ और उसे अपने वश में कर लो, और समुद्र की मछलियों तथा आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर चलने–फिरने वाले प्रत्येक जीव–जन्तु पर अधिकार रखो'"* (उत्प0 1:27–28)।

बहरहाल, पाप के कारण आदम अपना अधिकार खो बैठा और शैतान इस संसार का "देवता" (नेता) बन बैठा। चूंकि पृथ्वी पर पाप प्रवेश कर चुका था, इसलिए प्रभु परमेश्वर ने पृथ्वी को श्राप दिया। नतीजतन यह पृथ्वी परेशानी, बीमारी, पीड़ा एवं मौत का डेरा बन गई और तब से अब तक यही दशा है। परन्तु सुखद सत्य यह है कि इसकी यही दशा हमेशा तक नहीं बनी रहेगी। प्रकाशितवाक्य 20:11 में इसकी अभिपुष्टि की गई है: *"फिर मैंने एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उसे देखा जो उस पर बैठा था। उसकी उपस्थिति से आकाश और पृथ्वी भाग गये और उन्हें कोई स्थान न मिला"।*

अविश्वासियों के अंतिम न्याय–दंड के पश्चात् वर्तमान पृथ्वी–आकाश नष्ट कर दिए जाएंगे। *"तब मैंने नया आकाश और नई पृथ्वी को देखा क्योंकि पहिला आकाश और पहली पृथ्वी मिट गई थी,*

और कोई समुद्र भी न रहा" (प्रका0 21:1)। इस पृथ्वी और आकाश को नष्ट करने के बाद प्रभु परमेश्वर एक नये आकाश और नई पृथ्वी का सृजन करेगा। सब कुछ नया होगा। नये आकाश और पृथ्वी में परमेश्वर के अनुग्रह एवं दया के प्रकटीकरण की ईश्वरीय योजना पूर्ण होगी, क्योंकि नया आकाश व पृथ्वी मनुष्य की अवज्ञा के द्वारा कभी भ्रष्ट नहीं होंगे।

नये आकाश और नई पृथ्वी के बाद यूहन्ना ने अपने दर्शन में एक नये नगर को देखा। *"फिर मैंने पवित्र नगरी, नये यरूशलेम को परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से उतरते देखा; वह ऐसी सजाई गई थी जैसी दुल्हिन अपने पति के लिए सिंगार किए हो"* (प्रका0 21:2)। यह कोई मानव–निर्मित इहलौकिक नगर नहीं होगा। बल्कि यह तो परमेश्वर–कृत एक पवित्र नगर होगा जिसे प्रभु के लोगों के लिए स्वर्ग से धरती पर उतारा जाएगा। यूहन्ना रचित सुसमाचार के चौदहवें अध्याय में, प्रभु यीशु ने अपने स्वर्गारोहण से पूर्व अपने लोगों के लिए "जगह तैयार करने" की बात किया। हो सकता है कि उसने इस "नये यरूशलेम" की ओर इशारा किया हो (यूह0 14:1–3)। वर्तमान आकाश और पृथ्वी को नष्ट करते समय प्रभु परमेश्वर वह सब कुछ नष्ट करेगा जो पाप द्वारा भ्रष्ट और अशुद्ध कर दिया गया है।

"तब मैंने सिंहासन से एक ऊंची आवाज़ को यह कहते सुना, 'देखो, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है, वह उनके मध्य निवास करेगा। वे उसके लोग होंगे तथा परमेश्वर स्वयं उनके मध्य रहेगा'" (प्रका0 21:3)। नये आकाश व पृथ्वी की रचना करने तथा नये यरूशलेम को पृथ्वी पर अवतरित करने के पश्चात् स्वयं प्रभु परमेश्वर सदा–सर्वदा के लिए अपने लोगों के मध्य निवास करने आएगा। तब फिर कभी (पाप के कारण) मनुष्य अपने परमेश्वर से पृथक नहीं होगा। मसीह की जीवनदायी धार्मिकता पाने के कारण

पिता परमेश्वर की दृष्टि में हम पवित्र एवं सिद्ध होंगे, अतः वह अपनी उपस्थिति से हमें न तो कभी भगाएगा और न ही कभी त्यागेगा। पाप में पतन से पूर्व आदम ने अपने सृष्टिकर्ता के साथ जिस सहभागिता एवं सामीप्य का आनन्द पाया वैसी ईश्वरीय सहभागिता एवं समीप्य का पूर्ण आनन्द मनुष्य को कभी नहीं मिला। वही ईश्वरीय संगति, सहभागिता एवं सामीप्य नये यरूशलेम में पुनः स्थापित की जाएगी।

"और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; फिर न कोई मृत्यु रहेगी न कोई शोक, न विलाप और न पीड़ा रहेगी। पहिली बातें बीत गई हैं" (प्रका0 21 :4)। चूंकि मसीह यीशु के लहू के द्वारा पाप का दंड–मूल्य पूर्णरूपेण चुकता किया जा चुका है और हमें उसके द्वारा नया जीवन (मसीह का जीवन) प्रदान किया गया है; इसलिए उस समय दुःख, दर्द एवं मृत्यु का नामोनिशान भी नहीं होगा। यह सब पुरानी जमीन व आसमान के साथ ही मिट जाएंगे। इतना ही नहीं बल्कि *"मैंने नगर में कोई मंदिर न देखा क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेमना ही मंदिर है"* (प्रका0 21:22)। पुराना नियम काल में यहूदियों का मंदिर तथा उस मंदिर में भेंट–बलिदान चढ़ाने की धर्म–विधियां मनुष्य के पापीपन तथा परमेश्वर से उसकी पृथकता के परिचायक थे। लेकिन **नये यरूशलेम** में मंदिर या भेंट–बलिदानों की कोई जरूरत नहीं होगी, क्योंकि वहां पाप का अस्तित्व ही नहीं होगा। वहां स्वयं पिता परमेश्वर उपस्थित होगा तथा मेमना अर्थात् यीशु मसीह होगा जिसने पाप के दंड, पाप की अधीनता और (नये यरूशलेम में) पाप की उपस्थिति से छुटकारे को सम्भव किया।

"उस नगर को सूर्य और चांद के प्रकाश की आवश्यकता नहीं क्योंकि परमेश्वर की महिमा ने उसे आलोकित किया है और मेमना उसका दीपक है" (प्रका0 21:23)। सृष्टि के प्रारम्भ से ही परमेश्वर ने मनुष्य को दिन की रोशनी के लिए सूर्य तथा रात की

रोशनी के लिए चांद प्रदान किया। लेकिन नये यरूशलेम में सूरज और चांद की जरूरत नहीं होगी। प्रभु परमेश्वर एवं मसीह यीशु की महिमा का तेज ही वहां की ज्योति होगी जिससे सब कुछ प्रकाशमान रहेगा। (मर0 9:1–3)।

"जब जातियां उसके प्रकाश में चलेंगी, और पृथ्वी के राजा अपने प्रताप को उसमें लाएंगे। उसके फाटक दिन के समय कभी बन्द न होंगे, क्योंकि वहां रात्रि न होगी। वे जातियों के वैभव और सम्मान को उसमें लाएंगे" (प्रका0 21:24–26)। आदम–हव्वा के पाप के समय से शारीरिकतापूर्ण बैर–भाव, ईर्ष्या–द्वेष, मत–भेद तथा क्रोध इत्यादि का बोलबाला रहा है। परन्तु नये यरूशलेम में सब लोगों के मध्य सच्ची एकता, मेल–मिलाप व शांति रहेगी। हमारे इस शरीर को जीवित रहने हेतु विश्राम की जरूरत पड़ती है, इसलिए परमेश्वर ने रात्रि–काल का प्राविधान किया। रात में विश्राम के बाद अगले दिन हमारी देह ज्यादा चुस्त–दुरुस्त होती है। किन्तु *प्रकाशितवाक्य* के इन पदों के अनुसार नये यरूशलेम में रात नहीं होगी। ज्योति का स्रोत स्वयं प्रभु परमेश्वर होगा, भौतिक सूर्य नहीं। अतः निरन्तर प्रकाश होगा।

"परन्तु कोई भी अपवित्र वस्तु या कोई घृणित कार्य अथवा झूठ पर आचरण करने वाला उसमें प्रवेश न करेगा, परन्तु केवल वे जिनके नाम मेमने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं" (प्रका0 21:27)। ध्यान दें कि बुराईयां हमारे नाम को "जीवन की पुस्तक" में लिखे जाने से वंचित रखेंगी। लेकिन रोचक यह है कि यहां यह पद यह नहीं कहता कि सुकर्म (मानुषिक धर्म–कर्म) हमारे नाम को इसमें दर्ज करा सकते हैं। स्मरण रहे! केवल उद्धारकर्ता मसीह यीशु द्वारा पूर्ण किए गये मुक्तिप्रद कार्य पर **विश्वास** ही हमारे नाम को "जीवन की पुस्तक" में दर्ज कराता है (मत्ती 7:22–23; व्यव0 9:4)।

"फिर उसने मुझे जीवन के जल की नदी दिखाई, जो स्फटिक के समान स्वच्छ थी और जो परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलकर... बहती है" (प्रका0 22:1)। यहां नदी के जिस जल की बात पाई जाती है वह बरसात का पानी अथवा अन्य किसी भौगोलिक स्रोत का पानी नहीं है। इस जल का उद्‌भव–स्थल परमेश्वर का सिंहासन होगा। इसी नदी से **नये यरूशलेम** के समस्त जीवित प्राणियों को जीवन मिलता रहेगा। यह इस बात की यादगार होगी कि सारे जीवित प्राणियों का जीवनदाता प्रभु परमेश्वर ही है। वही अनन्त जीवन का भी दाता है; जो सदा–सर्वदा के लिए हमारे वास्ते है। जैसे प्रभु परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए मरुभूमि में जल प्रदान किया था, उसी प्रकार नये यरूशलेम में सब लोगों को जीवित जल एवं जीवन प्रदान करता रहेगा।

"नगर के मुख्य मार्ग के बीच बहती है। नदी के दोनों किनारों पर जीवन का वृक्ष था, जिसमें बारह प्रकार के फल लगते थे। वह प्रतिमाह फलता था, और इस वृक्ष की पत्तियां जाति–जाति की चंगाई के लिए थी" (प्रका0 22:2)। पाप में पतन के कारण मनुष्य अदन की वाटिका में "जीवन के वृक्ष" के फल को नहीं खा सका। परन्तु नये यरूशलेम में एक नया **जीवन–वृक्ष** होगा (और चूंकि वहां पाप नहीं होगा) जिसके फल को खाकर हम सदाकाल तक जीवित रहेंगे।

"फिर वहां कोई शाप न रहेगा, पर इस नगर में परमेश्वर और मेमने का सिंहासन होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे" (प्रका0 22:3)। नई पृथ्वी पर वर्तमान धरती की पाप–श्रापित चीजें नहीं होंगी – हानिप्रद खर–पतवार, आंधी–तूफान, बीमारियां तथा मृत्यु वगैरह। इसलिए नये **यरूशलेम** में हमें सदा–सर्वदा तक प्रभु परमेश्वर की सेवा करने का महान सुअवसर प्राप्त रहेगा।

"वे उसके मुख को देखेंगे और उसका नाम उनके मस्तकों पर होगा" (प्रका0 22:4)। आदम के पाप में पतन से पूर्व प्रभु परमेश्वर उसका मित्र था और उसके पास आकर उससे बातचीत करता था। लेकिन पाप में गिरने के बाद आदम को अदन की वाटिका से बाहर, परमेश्वर की उपस्थिति से दूर कर दिया गया। बहरहाल, प्रभु यीशु पर विश्वास करने वालों का परमेश्वर से मेल मिलाप हो जाता है और उन्हें लेने के लिए जब मसीह पुनः वापस आएगा तब उन्हें एक नयी पुनरुत्थान–प्राप्त देह मिलेगी। अतः नयी पृथ्वी पर परमेश्वर के सभी विश्वासी उसके समीप रहेंगे और उसे आमने–सामने देखेंगे अर्थात् उसके मुखमंडल का दर्शन करेंगे। यहां पवित्र वचन यह भी कहता है कि परमेश्वर की प्रत्येक संतान के 'माथे पर उसका नाम लिखा होगा'। महाक्लेशकाल में ख्रीष्ट–विरोधी के सभी अनुयायियों पर छः सौ छयासठ (666) की छाप लगाई जाएगी जो इस बात का प्रमाण होगा कि वे उसके अनुयायी हैं और उसी का अनुसरण कर रहे हैं। परन्तु परमेश्वर के अनर्जित अनुग्रह के द्वारा हमारे ऊपर छः सौ छयासठ की छाप नहीं, बल्कि 'प्रभु परमेश्वर का नाम' अंकित होगा। कितना महान विशेषाधिकार कि हमारे माथे पर परम प्रधान परमेश्वर की छाप होगी कि हम उसके हैं।

"फिर कोई रात न होगी। उन्हें न दीपक न सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें प्रकाश देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे" (प्रका0 22:5)। वर्तमान पतित संसार में पाप का शासन है, परन्तु नयी पृथ्वी पर मसीह के साथ उसके विश्वासीजन शासन करेंगे। उसके साथ वहां की सारी चीजों पर उसके लोग सदाकाल तक शासन करते रहेंगे। हां, इस जीवन में विश्वासियों को तमाम कठिन एवं अप्रिय परिस्थितियों से होकर गुजरना है, परन्तु वह दिन भी आने वाला है जबकि हम अपने प्रभु के साथ शासन करेंगे।

"तब उसने मुझसे कहा, 'ये बातें विश्वसनीय और सत्य हैं। प्रभु ने, जो नबियों के आत्माओं का परमेश्वर है, अपने स्वर्गदूत को भेजा कि अपने दासों को वे बातें दिखा दे जिनका शीघ्र पूरा होना अवश्य है। देख, मैं शीघ्र आने वाला हूं। धन्य है वह जो इस पुस्तक की नबूवत के वचन को मानता है'... मैं प्रत्येक को जो इस पुस्तक की नबूवत के वचनों को सुनता है, गवाही देता हूं: यदि कोई इनमें कुछ बढ़ाएगा तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखी विपत्तियों को उस पर बढ़ाएगा। यदि कोई इस नबूवत की पुस्तक के वचनों को घटाएगा तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखित जीवन के वृक्ष और पवित्र नगरी से उसका भाग छीन लेगा। जो इन बातों की साक्षी देता है, वह यह कहता है, 'हां मैं शीघ्र आने वाला हूं'। आमीन! हे प्रभु यीशु आ! प्रभु यीशु का अनुग्रह सब के साथ रहे। आमीन"। पवित्र शास्त्र के इन अटल शब्दों पर ध्यान दें कि *प्रकाशितवाक्य* की ये सब बातें "विश्वसनीय और सत्य" हैं। क्यों? क्योंकि यह सब प्रकाशना प्रभु परमेश्वर की ओर से है। यहां सातवें पद में स्पष्ट कहा गया है कि इन बातों पर विश्वास–भरोसा रखने वाले "धन्य" हैं। हम जिस परिमाण में सत्य को जानते, मानते व विश्वास करते हैं, उस परिमाण में परमेश्वर की इच्छा–योजना की आशिषों का अनुभव पाएंगे। **प्रकाशितवाक्य** नामक यह बाइबॅल पुस्तक तथा बाइबॅल की सभी शेष पुस्तकें, परमेश्वर द्वारा चुने गये शब्दों में, उसके पवित्र आत्मा द्वारा भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों के माध्यम से उपलब्ध करायी गई हैं। पवित्र बाइबॅल सर्वत्र सब लोगों के लिए परमेश्वर का पूर्ण संदेश है। अन्ततः परमेश्वर के अनुग्रह की महत्ता पर जोर देते हुए *प्रकाशितवाक्य* के अंतिम शब्द इस प्रकार हैं: "प्रभु यीशु का अनुग्रह सबके साथ रहे, आमीन"।

✞ ✞ ✞

इस श्रंखला की पुस्तकों का निम्नलिखित क्रम में अध्ययन ज्यादा लाभप्रद होगा :

1. परमेश्वर-कृत उद्धार
2. प्रेरितों के कार्य
3. वह मुझमें और मैं उसमें
4. रोमियों
5. इफिसियों
6. पहला कुरिन्थियों
7. पहला तीमुथियुस
8. तीतुस
9. पहला और दूसरा थिस्सलुनीकियों
10. प्रकाशितवाक्य
11. गलातियों